SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

रश्मि

40वाँ अंक (नागपुर विशेषांक)

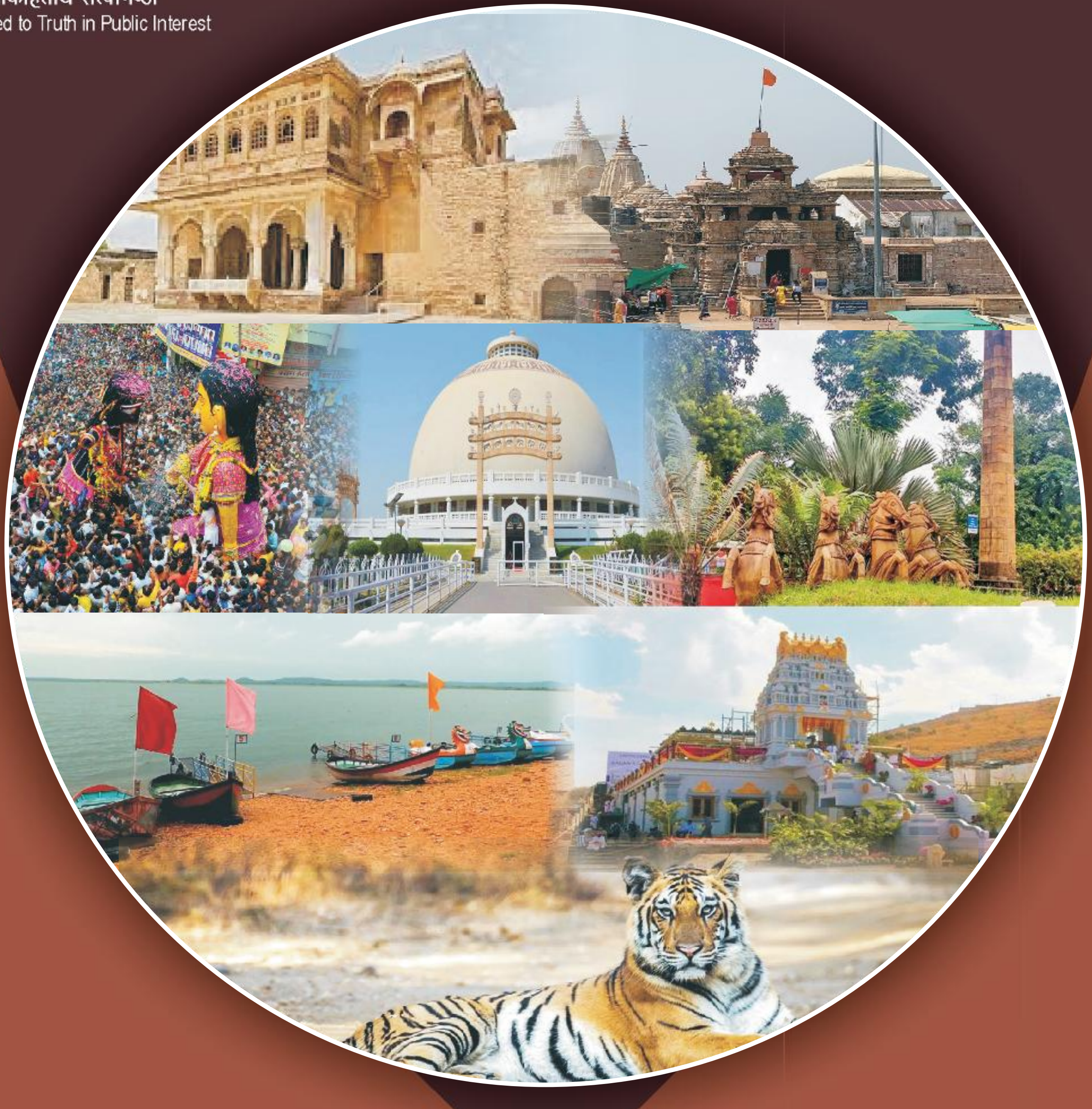

भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग

कार्यालय - महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II)

महाराष्ट्र, नागपुर

भारत सरकार

गृह मंत्रालय

राजभाषा विभाग

(सदैव ऊर्जावान ; निरंतर प्रयासरत)

राजभाषा प्रतिज्ञा

भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343 और 351 तथा राजभाषा संकल्प 1968 के आलोक में हम, केंद्र सरकार के कार्मिक यह प्रतिज्ञा करते हैं कि अपने उदाहरणमय नेतृत्व और निरंतर निगरानी से; अपनी प्रतिबद्धता और प्रयासों से; प्रशिक्षण और प्राइज़ से अपने साथियों में राजभाषा प्रेम की ज्योति जलाए रखेंगे, उन्हें प्रेरित और प्रोत्साहित करेंगे; अपने अधीनस्थ के हितों का ध्यान रखते हुए; अपने प्रबंधन को और अधिक कुशल और प्रभावशाली बनाते हुए राजभाषा– हिंदी का प्रयोग, प्रचार और प्रसार बढ़ाएंगे। हम राजभाषा के संवर्धन के प्रति सदैव ऊर्जावान और निरंतर प्रयासरत रहेंगे।

जय राजभाषा ! जय हिंद !

❒❒❒

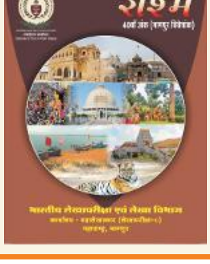

पत्रिका के मुखपृष्ठ पर नागपुर के विशिष्ट पर्यटन स्थलों में सीताबर्डी किला, रामटेक मंदिर, मारबत त्योहार, दीक्षाभूमि, जीरो माईल, खिंडसी झील, बालाजी मंदिर तथा नागपुर का मुख्य वन्य जीव बाघ के छायाचित्र दर्शाए गए हैं जो नागपुर की सांस्कृतिक धरोहर की पहचान हैं।

रश्मि

सत्यमेव जयते

भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा

Dedicated to Truth in Public Interest

कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा–II)

महाराष्ट्र, नागपुर

रश्मि परिवार

• मुख्य संरक्षक •

श्री दत्तप्रसाद शिरसाट
महालेखाकार

• संरक्षक •

सुश्री मेघना जैन
उप महालेखाकार (प्रशासन)

• संपादक •

डॉ. प्रियंका बी. गोस्वामी
सहायक निदेशक (राजभाषा)

• सह-संपादक •

श्री. राजेश कुमार कटरे
वरिष्ठ अनुवादक

सुश्री. नयना कुमारी इस्सर
कनिष्ठ अनुवादक

सुश्री. यशी श्रीवास्तव
कनिष्ठ अनुवादक

अस्वीकरण : पत्रिका में व्यक्त विचार रचनाकारों के निजी विचार हैं, उनसे कार्यालय / संपादक मंडल अथवा प्रकाशक का सहमत होना आवश्यक नहीं है। उनसे उत्पन्न किसी भी वाद की जिम्मेदारी रश्मि परिवार अस्वीकार करता है।

महालेखाकार का संदेश

हमारे कार्यालय की हिंदी गृह पत्रिका 'रश्मि' के 40वें अंक के प्रकाशन पर मुझे अपार हर्ष की अनुभूति हो रही है। हिंदी हमारे देश की राजभाषा है। हिंदी में सरकारी काम-काज करना हमारा वैधानिक दायित्व है। राजभाषा हिंदी केवल हमारे सरकारी कामकाज और संवाद का माध्यम ही नहीं है, बल्कि यह हमारे देश की सांस्कृतिक पहचान भी है। कार्यालयीन कार्यों में हिंदी का प्रयोग हमें अपनी जड़ों से जोड़ता है और संवाद को अधिक सहज एवं प्रभावी बनाता है।

हिंदी गृह पत्रिकाएँ हमारे विचारों की अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम हैं। पत्रिकाएँ हमें अपने विचारों के परस्पर आदान-प्रदान का अवसर प्रदान करती हैं। मुझे पूर्ण विश्वास है कि 'रश्मि' पत्रिका का यह 'नागपुर विशेषांक' पाठकों के लिए ज्ञानवर्धक सिद्ध होगा तथा हिंदी के प्रचार-प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा।

मैं पत्रिका के संपादक मंडल को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ देता हूँ। मुझे आशा है कि 'रश्मि' के माध्यम से हम आगे भी ज्ञान, सृजनशीलता और सकारात्मक ऊर्जा का प्रकाश फैलाते रहें।

सभी को हार्दिक शुभकामनाएँ...

दत्तप्रसाद शिरसाट

दत्तप्रसाद शिरसाट

महालेखाकार

उप महालेखाकार (प्रशासन) का संदेश

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि हमारे कार्यालय की हिंदी गृह पत्रिका 'रश्मि' का 40वां अंक प्रकाशित किया जा रहा है। इस अंक को 'नागपुर विशेषांक' के रूप में प्रकाशित करना अत्यंत गौरव की बात है।

हिंदी गृह पत्रिकाएँ कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों की रचनात्मक प्रतिभा को अभिव्यक्त करने का एक सशक्त माध्यम होती हैं। 'रश्मि' पत्रिका हमारे पदाधिकारियों की साहित्यिक अभिरुचि और राजभाषा के प्रति उनके समर्पण को दर्शाती है।

'रश्मि' नाम स्वतः अपने आप में प्रकाश एवं उर्जा का प्रतीक है। मुझे विश्वास है कि पत्रिका का यह विशेषांक न केवल सूचनाप्रद होगा बल्कि सहकर्मियों के बीच रचनात्मक संवाद को भी बढ़ावा देगा। इस अंक में समाहित रचनाओं के माध्यम से सभी पाठकों को नागपुर शहर को और बेहतर ढंग से जानने का अवसर मिलेगा।

मैं इस अंक की सफल प्रकाशन के लिए संपादक मंडल एवं सभी रचनाकारों को हार्दिक बधाई और शुभकामनाएँ देती हूँ।

मेघना जैन

सुश्री मेघना जैन

उप महालेखाकार (प्रशासन)

संपादकीय ...

प्रिय पाठकों,

हमारी कार्यालयीन हिंदी गृह पत्रिका 'रश्मि' के 40वें अंक को 'नागपुर विशेषांक' के रूप में प्रस्तुत करते हुए मुझे हर्ष एवं गर्व की अनुभूति हो रही है। किसी भी कार्यालय की गृह पत्रिका केवल शब्दों का संकलन नहीं होती, बल्कि वह उस कार्यालय की कार्यसंस्कृति, रचनात्मकता और सामूहिक भावना का दर्पण भी होती है। हमारी गृह पत्रिका 'रश्मि' का उद्देश्य भी पदाधिकारियों की सृजनशीलता को मंच प्रदान करना तथा हिंदी भाषा के माध्यम से ज्ञान, अनुभवों का आदान-प्रदान करना है।

नागपुर महाराष्ट्र का एक ऐसा शहर है, जो अपने इतिहास और संस्कृति के कारण प्रसिद्ध रहा है। नागपुर को प्रायः ''संतरों का शहर'' भी कहा जाता है। भारत के भौगोलिक केंद्र के रूप में प्रसिद्ध यह नगर लंबे समय से सामाजिक समरसता, राजनीतिक चेतना और सांस्कृतिक संवाद का महत्वपूर्ण केंद्र रहा है। इस अंक में हमने नागपुर के इतिहास, संस्कृति, साहित्य, पर्यटन,त्योहार इत्यादि विविध आयामों को समेटने का प्रयास किया है। हमारा उद्देश्य केवल जानकारी देना मात्र नहीं है, बल्कि पाठकों को इस शहर की संवेदनाओं से जोड़ना भी है।

हमें आशा है कि प्रस्तुत अंक में प्रकाशित रचनाओं से सुधी पाठक निश्चित तौर से लाभान्वित होंगे। अंत में, मैं उन सभी साथियों का आभार व्यक्त करती हूँ जिन्होंने अपनी बहुमूल्य रचनाओं से इस अंक को समृद्ध बनाया है। आपके सुझावों एवं प्रतिक्रियाओं की प्रतीक्षा रहेगी ताकि हम भविष्य के अंकों को और बेहतर बना सकें। शुभकामनाओं सहित...

प्रियंका

डॉ. प्रियंका बी. गोस्वामी
सहायक निदेशक (राजभाषा)

अनुक्रमणिका

क्र.	लेख / कविता		पृष्ठ क्र.
1.	दिलचस्प नागपुर : एक शहर कई रंग		1
2.	नागपुर के रंग – इतिहास, परंपरा, प्रगति और पहचान	श्रीमती नीरजा टंडन	2
3.	नागपुर : स्वतंत्रता संग्राम का गौरवशाली केंद्र	श्री मो. अवेश अंसारी	8
4.	नागपुर के त्योहार	सुश्री नीना वर्मा	10
5.	नागपुर की कला एवं लोक संस्कृति	श्रीमती वर्षा मुकेश खलाने	13
6.	विदर्भ के विस्मृत कलमकार – यादव माधव काले एवं राजा बढे	श्रीमती नयना इस्सर	16
7.	नागपुर : एक नजर में	राजेश कुमार कटरे	19
8.	दीक्षाभूमि	प्रियंका कुमारी	24
9.	मेरा नागपुर : एक शांत शक्ति का केंद्र	श्रीमती बेबिनंदा आर. ठाकुर	25
10.	कार्यालय के विशेष कार्यक्रम		27
11.	पश्चिम क्षेत्रीय फुटबाल टूर्नामेंट : 2025-26		28
12.	नागपुर के कुछ प्रमुख मंदिर	श्रीमती रिंकू सिन्हा	29
13.	नागपुर की ऐतिहासिक यात्रा एवं समृद्ध सांस्कृतिक विरासत	डॉ. प्रियंका बी. गोस्वामी	32
14.	सीताबर्डी किला की सैर	श्री वैभव बहल	34
15.	अपनापन	श्री अनुराग पाठक	35
16.	बालाजी श्री कार्तिकय मंदिर	श्री अभिलेख कुमार निराला	37
17.	नागपुर शहर	सुश्री यशी श्रीवास्तव	39
18.	खेल भावना, प्रतिस्पर्धा और उत्साह का अद्भुत संगम	श्री रसिक सूर्यवंशी	41
19.	प्रशासनिक शब्दावली		44
20.	कार्यालयीन हिंदी के वाक्य साँचे		45
21.	हिंदी के प्रयोग के लिए वर्ष 2026-27 का वार्षिक कार्यक्रम		46
22.	हिंदी कार्यशाला		48
23.	राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक		49
24.	आपके पत्र		52

दिलचस्प नागपुर : एक शहर कई रंग

उपनाम	- संतरा शहर, भारत का हृदय, भारत की बाघ राजधानी, भारत का बाघ प्रवेश द्वार
स्थान	- महाराष्ट्र का तीसरा, भारत का 13 वां विश्व का 114 वां सबसे बड़ा शहर
संस्थापना	- राजा बख़्त बुलंद शाह द्वारा 1702 ई. में
नाम स्रोत	- नाग नदी
राजनैतिक महत्व	- महाराष्ट्र की शीतकालीन राजधानी (राज्य विधानमंडल का शीतकालीन सत्र यहीं आयोजित होता है)
क्षेत्रफल	- 227 वर्ग किलोमीटर
जनसंख्या	- लगभग 31 लाख (2021)
मुख्य भाषाएँ	- मराठी, हिंदी और उर्दू
जलवायु	- उष्णकटिबंधीय आर्द्र और शुष्क
व्यंजन	- साओजी व्यंजन, तरी पोहा, पटोड़ी, कढ़ी
प्रमुख त्यौहार	- दीपावली, होली, गणेश चतुर्थी, मकर संक्रांति, ईद, मार्बत, पोला, धम्मपरिवर्तन दिवस, मुहर्रम
प्रमुख पर्यटन स्थल	- दीक्षाभूमी, सीताबर्डी किला, स्वामीनारायण मंदिर, अदासा मंदिर, गणेश टेकड़ी, बालाजी मंदिर, अंबाझरी झील, गोरेवाडा प्राणी संग्रहालय व जंगल सफारी, मानसर पुरातात्त्विक स्थल, रामटेक

(स्त्रोत - विकिपीडिया लेख - नागपुर)

❑❑❑

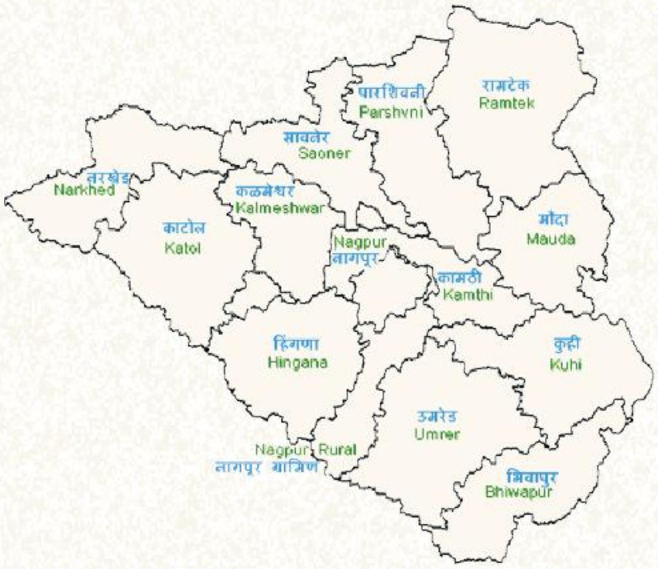

नागपुर का मानचित्र

नागपुर के रंग – इतिहास, परंपरा, प्रगति और पहचान

श्रीमती नीरजा टंडन
स.ले.प.अ.

नागपुर भारत का 13वां, विश्व का 114वां और महाराष्ट्र राज्य का तीसरा सबसे बड़ा शहर है। यह महाराष्ट्र राज्य की उप-राजधानी अथवा शीतकालीन राजधानी है, जहाँ राज्य विधानसभा का शीतकालीन सत्र होता है।

★ नागपुर की स्थापना 18वीं शताब्दी (1702-1703) में देवगड़ (छिंदवाड़ा) के शासक गोंड वंश के राजा बख्त बुलंद शाह ने की थी । फिर वह राजा भोसले के उपरान्त मराठा साम्राज्य में शामिल हो गया। 19वीं सदी में अंग्रेज़ी हुकूमत ने उसे मध्य प्रान्त व बेरार की राजधानी बना दिया। यह शहर 1960 तक मध्य भारत राज्य की राजधानी था। 1960 के बाद यहां की मराठी आबादी को देखते हुए इसे महाराष्ट्र के जिले के रूप में शामिल कर लिया गया। आज़ादी के बाद राज्य पुनर्रचना ने नागपुर को महाराष्ट्र की उपराजधानी बना दिया। इतिहास के पन्नों में झाँकें तो नागपुर की जड़ें ईसा पूर्व 8वीं शताब्दी तक जाती हैं। आधुनिक इतिहास में, वर्ष 2002 में शहर ने अपने 300 वर्षों की स्थापना पूरी की, जो इसकी समृद्ध विरासत और निरंतर विकास की कहानी कहता है।

★ महाराष्ट्र राज्य के पूर्वी हिस्से में स्थित 9890 वर्ग किलोमीटर के क्षेत्र में फैले नागपुर जिले में 13 तहसील और 1969 गांव शामिल हैं। भौगोलिक दृष्टि से नागपुर का स्थान 21°06' उत्तर अक्षांश, 79°03' पूर्व रेखांश है।

★ यह शहर नाग नदी के किनारे बसा है, जिसके कारण इसका नाम नागपुर पड़ा। यह नदी नागपुर के पुराने हिस्से से गुजरती है। नागपुर महानगर पालिका के चिन्ह पर नदी और एक नाग है।

★ **भारत का भौगोलिक केंद्र** - नागपुर को व्यापक रूप से भारत के भौगोलिक केंद्र के रूप में मान्यता प्राप्त है। यहाँ अंग्रेजों द्वारा बनाया गया भौगोलिक केंद्र जीरो माइल स्टोन (विक्टोरियन-युग का एक स्तंभ) है, जिसे भारत का केंद्र बिंदु माना जाता है। ज़ीरो माइल स्टोन का ऐतिहासिक रूप से ब्रिटिश भारत के विभिन्न हिस्सों की दूरी मापने के लिए उपयोग किया जाता था।

★ सेंट्रल इंडिया स्पिनिंग एंड वीविंग कंपनी लिमिटेड, देश की पहली टेक्सटाइल मिल थी जिसे टाटा ग्रुप ने नागपुर में शुरू किया था। इसे आम तौर पर ''एम्प्रेस मिल'' के नाम से जाना जाता है क्योंकि इसका उद्घाटन 1 जनवरी 1877 को हुआ था, जिस दिन महारानी विक्टोरिया को भारत की महारानी घोषित किया गया था।

★ **ऐतिहासिक राजनीतिक महत्व:-** नागपुर कई वर्षों तक भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का मुख्यालय था। नागपुर ने 1920 के दशक से 1960 के दशक तक कई राष्ट्रीय सम्मेलनों की मेजबानी की। यह शहर दलित राजनीतिक आंदोलनों के लिए भी एक महत्वपूर्ण स्थान रहा है । नागपुर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और विश्व हिंदू परिषद जैसे राष्ट्रवादी संघटनाओ का एक

प्रमुख केंद्र है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) का मुख्यालय भी नागपुर शहर में स्थित है।

★ नागपुर, भारतीय रिज़र्व बैंक (आर.बी.आई) के रीजनल ऑफिस में से एक है। इसे अंग्रेजों द्वारा बनाई गई सबसे अच्छी बिल्डिंग माना जाता है। सुरक्षा के लिहाज़ से भी नागपुर देश के सबसे सुरक्षित शहरों में गिना जाता है। यही कारण है कि भारत के स्वर्ण भंडार का एक बड़ा हिस्सा भारतीय रिज़र्व बैंक की नागपुर शाखा में सुरक्षित रखा गया है। साथ ही, नागपुर कानपुर के अलावा एकमात्र ऐसा शहर है, जो राज्य की राजधानी नहीं है लेकिन वहाँ रिज़र्व बैंक है।

★ नागपुर को ऑरेंज सिटी भी कहा जाता है क्योंकि यहां बहुत ज्यादा और अच्छे संतरे उगाए जाते हैं। यहां की मिट्टी, धूप और मौसम संतरे की खेती के लिए बिल्कुल सही होती है। 18वीं सदी में भोसले राजाओं ने देखा कि नागपुर की जमीन संतरे उगाने के लिए बढ़िया है। उन्होंने किसानों को जमीन, पानी और खेती के लिए मदद दी। इससे यहां संतरे के बाग बढ़ने लगे। आज के समय में नागपुर के कलमेश्वर, काटोल, नरखेड़ और सावनेर जैसे इलाकों में बड़ी संख्या में संतरे की खेती की जाती है। इनमें नागपुर का नागपुरी संतरा बहुत ही ज्यादा मशहूर है। इसका स्वाद खट्टा-मीठा होता है और इसकी खुशबू भी बहुत खास होती है। अमरावती और नागपुर जिले मिलकर महाराष्ट्र में संतरे की खेती का करीब 80% हिस्सा बनाते हैं। यहां के संतरों में ज्यादा रस होता है और ये ज्यादा गूदेदार भी होते हैं। यहां के संतरों की डिमांड सिर्फ भारत में नहीं, बल्कि पूरी दुनिया में है।

★ संतरे के अलावा, नागपुर साओजी व्यंजन (क्षेत्रीय विविधताओं के साथ एक बहुत मसालेदार मुख्यत: मांसाहारी व्यंजन) और पारंपरिक मिठाइयों और स्थानीय स्नैक्स के लिए प्रसिद्ध है जो मराठी और मध्य-भारतीय स्वादों का मिश्रण हैं।

★ हल्दीराम (नागपुर) भारत के सबसे प्रमुख स्नैक और मिठाई निर्माताओं में से एक है, जिसकी शुरुआत 1937 में बीकानेर में गंगा बिशन अग्रवाल (हल्दीराम जी) द्वारा की गई थी। 1970 में नागपुर में पहली बड़ी उत्पादन इकाई स्थापित की गई, जो अब वैश्विक स्तर पर 80 से अधिक देशों में अपने नमकीन, मिठाइयाँ, और रेडी-टू-ईट फूड उत्पाद निर्यात करता है।

★ नागपुर में शुष्क उष्णकटिबंधीय (Dry Tropical) जलवायु है, जहाँ गर्म ग्रीष्मकाल, मध्यम मानसून और हल्की सर्दियाँ होती हैं। मार्च से जून तक भीषण गर्मी रहती है, मई सबसे गर्म महीना है। जून से सितंबर तक मानसून में अच्छी बारिश होती है, और नवंबर से जनवरी तक हल्की सर्दी होती है।

★ नागपुर, महाराष्ट्र, मुख्य रूप से मैंगनीज, कोयला, और लौह अयस्क जैसे खनिजों के लिए एक प्रमुख क्षेत्र है, जो राज्य के खनिज भंडार में बड़ा योगदान देता है। इसके अलावा, यहां क्रोमाइट, चूना पत्थर, और काइनाइट भी पाए जाते हैं। नागपुर में भारतीय खान ब्यूरो (आई.बी.एम.) का आधुनिक खनिज प्रसंस्करण प्रयोगशाला भी स्थित है। वेस्टर्न कोलफील्ड्स लिमिटेड (डब्ल्यू.सी.एल.), नागपुर, जो कोल इंडिया लिमिटेड की एक प्रमुख सहायक कंपनी है, इसका मुख्यालय नागपुर में है। यह महाराष्ट्र और मध्य प्रदेश में कोयला उत्पादन करती है।

★ डॉ. बाबासाहब अंबेडकर अंतर्राष्ट्रीय विमानक्षेत्र जिसे सोनेगांव एयरपोर्ट भी कहते हैं, यहां का सबसे नजदीकी एयरपोर्ट है जो सिटी सेंटर से 6 किलोमीटर की दूरी पर है। इस घरेलू एयरपोर्ट से देश के कई शहरों के लिए फ्लाइटें हैं। नागपुर में एशिया की दूसरी सबसे बड़ी एयर मेंटेनेंस वर्कशॉप है। नागपुर के डॉ. बाबासाहेब अंबेडकर इंटरनेशनल एयरपोर्ट का एयर ट्रैफिक कंट्रोल रूम भारत में सबसे व्यस्त है। नागपुर का एयरपोर्ट देश का पहला एयरपोर्ट बना जिसे ISO 27000 सर्टिफिकेट मिला है। असल में, नागपुर न सिर्फ भारत में बल्कि दुनिया में भी एयर नेविगेशन सर्विस प्रोवाइडर (ए.एन.एस.पी.) के लिए सर्टिफाइड होने वाला पहला एयरपोर्ट है। दुनिया में सात एयरपोर्ट ऐसे हैं जिनके पास ISO 27000 है, लेकिन उनमें से किसी के पास भी (ए.एन.एस.पी.) के लिए यह सर्टिफिकेट नहीं है।

★ नागपुर जंक्शन रेलवे स्टेशन राज्य का एक प्रमुख रेलवे जंक्शन है जो उत्तरी, दक्षिणी, पूर्वी और पश्चिमी लाइनों को जोड़ता है। शहर की रेलवे कार्यशालाएं और इसकी केंद्रीय स्थिति इसे अखिल भारतीय यात्री और माल ढुलाई के लिए महत्वपूर्ण बनाती है। यह मध्य रेल का एक बहुत बड़ा और व्यस्त डिविजन (भाग) है।

★ भारत का एकमात्र और अनोखा डबल डायमंड क्रॉसिंग (Diamond Crossing) नागपुर में स्थित है। यहाँ पूर्व, पश्चिम, उत्तर और दक्षिण - चारों दिशाओं से आने वाली रेल पटरियां एक-दूसरे को काटती हैं, जिससे ऊपर से देखने पर यह हीरे (Diamond) के आकार का दिखाई देता है। यह भारतीय रेलवे का एक दुर्लभ और इंजीनियरिंग चमत्कार है, जो नागपुर के मोहन नगर क्षेत्र में स्थित है। भारी ट्रैफ़िक के बावजूद, यहाँ ऑटोमैटिक सिग्नल और इंटरलॉकिंग सिस्टम के कारण आज तक कोई दुर्घटना नहीं हुई है। यह प्रणाली सुनिश्चित करती है कि एक समय में केवल एक ही ट्रेन क्रॉसिंग से गुजरे। यह रेल प्रेमियों और फोटोग्राफरों के लिए एक आकर्षण का केंद्र है।

★ नागपुर सेंट्रल रेलवे स्टेशन और अजनी स्टेशन के बीच की दूरी भारत में रेलवे स्टेशनों पर दो तय स्टॉप के बीच सबसे कम दूरी है।

★ नागपुर मेट्रो, जिसे माझी मेट्रो भी कहा जाता है, महाराष्ट्र राज्य, भारत में स्थित नागपुर शहर के लिए एक रैपिड ट्रांजिट सिस्टम है। इस सिस्टम में 2 कलर-कोडेड लाइनें हैं जो 37 स्टेशनों को जोड़ती हैं, जिनकी कुल लंबाई 38.2 किलोमीटर (23.7 मील) है। इसे भारत की सबसे ग्रीन मेट्रो रेल भी कहा जा रहा है।

★ राष्ट्रीय राजमार्ग 44, राष्ट्रीय राजमार्ग 47 और राष्ट्रीय राजमार्ग 53 नागपुर को देश के प्रमुख शहरों से जोड़ता है। मुंबई, संभलपुर, कोलकाता, वाराणसी और कन्याकुमारी जैसे शहरों से यहां सड़क मार्ग द्वारा पहुंचा जा सकता है। नागपुर में सिटी बस की सेवा भी उपलब्ध है जो शहर में लोगों को एक जगह से दूसरी जगह तक ले जाता है।

★ भारत की पहली इथेनॉल से चलने वाली ग्रीन बस सर्विस नागपुर में शुरू की गई। इन बसों में ऑटोमैटिक दरवाज़े, स्टॉपेज के लिए ऑटोमैटिक अनाउंसमेंट सिस्टम, रियर इंजन, फायर एक्सटिंग्विशर, (सीसीटीवी) कैमरे, ऑटोमैटिक इमरजेंसी विंडो बटन, चार्जर पॉइंट, व्हीकल ट्रैकिंग सिस्टम, अनाउंसमेंट के लिए माइक के साथ (एलईडी) डिस्प्ले वगैरह जैसी सुविधाएं हैं।

★ **विदर्भ के लिए शैक्षिक और प्रशासनिक केंद्रः-** महाराष्ट्र में मुंबई उपनगरीय जिले के बाद, नागपुर में दूसरी सबसे ज़्यादा साक्षरता दर है। राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज नागपुर विश्वविद्यालय महाराष्ट्र का एक बहुत बड़ा विश्वविद्यालय, भारत का 9वां सबसे पुराना, महाराष्ट्र का दूसरा सबसे पुराना और मध्य भारत का सबसे पुराना विश्वविद्यालय है। नागपुर में लगभग 10 से भी अधिक इंजीनियरिंग महाविद्यालय है। मेडिकल एवं अन्य विषयों की शिक्षा प्राप्त करने के लिए भी नागपुर एक स्थान है। महाराष्ट्र के नागपुर में (भारतीय प्रबंधन संस्थान) (आई.आई.एम.) का स्थायी परिसर, IIIT, और GCoE जैसे प्रमुख संस्थान स्थापित हैं। इसके अलावा, एम्स (AIIMS) और निपर (NIPER) जैसे आगामी प्रतिष्ठित संस्थानों के साथ यह शहर एक प्रमुख शैक्षिक और नवाचार हब के रूप में तेजी से विकसित हो रहा है। नागपुर में केंद्रीय प्रशासनिक कार्यालय, उच्च न्यायालय (2018 तक बॉम्बे उच्च न्यायालय की पीठ और निरंतर कानूनी तंत्र) भी स्थित है जो इसे विदर्भ क्षेत्र का बौद्धिक और नौकरशाही केंद्र बनाते हैं।

★ केंद्रीय कपास अनुसंधान संस्थान (सीआईसीआर) का मुख्यालय महाराष्ट्र के नागपुर में स्थित है। जो भारत में कपास उद्योग के विकास और स्थिरता को बढ़ाने के लिए कपास अनुसंधान, सुधार और उत्पादन तकनीकों पर केंद्रित है।

★ नागपुर स्थित - (सीआईसीआर-नीरी) (राष्ट्रीय पर्यावरण अभियांत्रिकी अनुसंधान संस्थान) भारत सरकार का एक प्रमुख अनुसंधान संस्थान है, जो 1958 से पर्यावरणीय समस्याओं के स्थायी समाधान खोजने में जुटा है। यह (सीआईसीआर) के तहत काम करता है और मुख्य रूप से प्रदूषण नियंत्रण, अपशिष्ट प्रबंधन और पर्यावरण नीतियां विकसित करने पर ध्यान केंद्रित करता है।

★ नेशनल फायर सर्विस कॉलेज (एनएफएससी) नागपुर, भारत सरकार के गृह मंत्रालय के अधीन एक प्रमुख संस्थान है, जो 1956 से अग्निशमन और अग्नि सुरक्षा इंजीनियरिंग में शिक्षा व प्रशिक्षण प्रदान कर रहा है। यह एशिया में एकमात्र ऐसा कॉलेज है जो बी.टेक (फायर इंजीनियरिंग) कोर्स और पेशेवर पाठ्यक्रम प्रदान करता है। 43 एकड़ के परिसर के साथ, यह संस्था उच्च-स्तरीय तकनीकी प्रशिक्षण के लिए प्रसिद्ध है।

★ नागपुर की विकास यात्रा में मिहान (मल्टी-मॉडल इंटरनेशनल कार्गो हब एंड एयरपोर्ट) एक ऐतिहासिक उपलब्धि है। मिहान भारत का सबसे बड़ा ग्रीनफील्ड कार्गो-आर्थिक क्षेत्र प्रयास है जो एक हवाई अड्डे से जुड़ा है। यह अपने प्रकार की सबसे बड़ी आर्थिक परियोजनाओं में से एक है जिसका उद्देश्य नागपुर को एक प्रमुख लॉजिस्टिक्स, फ़ार्मा, आईटी विनिर्माण केंद्र बनाना है। कई मीडियम साइज़ की कंपनियाँ कम लागत और सेंट्रल डिस्ट्रीब्यूशन का फायदा उठाने के लिए नागपुर में शिफ्ट हो गईं। खास बात यह है कि मिहान में बोइंग द्वारा निर्मित मेंटेनेंस, रिपेयर और ओवरहॉल (एमआरओ) सुविधा स्थित है। यह सुविधा दुनिया में शंघाई के बाद सिर्फ नागपुर में उपलब्ध है ।

★ आयुध निर्माणी अंबाझरी (ओएफएजे) नागपुर, भारत के रक्षा मंत्रालय के तहत एक

प्रमुख रक्षा उत्पादन इकाई है, जो भारतीय सशस्त्र बलों के लिए गोला-बारूद हार्डवेयर, जैसे गोले, कारतूस, फ्यूज और रॉकेट बनाती है। यह विशेष एल्यूमीनियम मिश्र धातुओं और लॉन्च किए गए आक्रमण पुलों (bridging equipment) के निर्माण के लिए भी जानी जाती है।

★ पेट्रोलियम और विस्फोटक सुरक्षा संगठन (PESO), नागपुर, भारत सरकार के वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय के तहत एक नोडल एजेंसी है, जिसका मुख्यालय 18 किमी पत्थर, अमरावती रोड, गोंडखैरी, नागपुर में स्थित है। यह विस्फोटक, संपीड़ित गैसों और पेट्रोलियम जैसे खतरनाक पदार्थों के सुरक्षित भंडारण, परिवहन और उत्पादन को विनियमित करता है।

★ विष्णु इंडस्ट्रियल केमिकल कंपनी (विको) की शुरुआत 1952 में श्री केशव पेंढरकर ने की थी। इनकी पहले नागपुर में एक राशन की दुकान हुआ करती थी। कंपनी आज अपने लगभग 40 उत्पाद 30 से ज्यादा देशों में एक्सपोर्ट कर रही है। 500 करोड़ से ज्यादा का टर्नओवर रखनेवाली इस कंपनी की शुरुआत बहुत ही छोटी थी। आज विको कंपनी की तीन बड़ी फैक्ट्री और तीन जगह ब्रांच ऑफिस हैं। इसके अलावा, नागपुर के पास काफी ज्यादा मात्रा में उनकी अपनी जमीन है, जहां पर जड़ी-बूटियां उगाई जाती हैं।

★ नागपुर नगर निगम (एनएमसी) ने स्मार्ट सिटी मिशन, बेहतर बुनियादी ढांचे, और टिकाऊ विकास में बड़ी उपलब्धियां हासिल की हैं, जिसमें 24 x 7 जल आपूर्ति परियोजना, 'स्मार्ट' एलईडी स्ट्रीट लाइटिंग और ठोस अपशिष्ट प्रबंधन (स्वच्छ सर्वेक्षण 2018 में पुरस्कार) शामिल हैं। यह भारत का पहला 4-स्तरीय परिवहन कॉरिडोर (मेट्रो) और जल्द ही सबसे बड़ा वेस्ट-टू-बायोगैस प्लांट बनाने की दिशा में काम कर रहा है।

★ नागपुर नगर निगम (NMC) ने नागरिकों द्वारा सोलर रूफटॉप पैनल लगाने को प्रोत्साहित करने के लिए कई कदम उठाए हैं, जिसमें सब्सिडी और तकनीकी सहायता शामिल है। इन कदमों का उद्देश्य शहर में छत पर सौर ऊर्जा (rooftop solar) की क्षमता बढ़ाकर कार्बन उत्सर्जन को कम करना और बिजली बिल में बचत करना है। नागपुर में कई प्रमुख सौर ऊर्जा परियोजनाएं प्रस्तावित और निर्माणाधीन हैं, जो शहर को एक सोलर हब के रूप में स्थापित कर रही हैं।

★ नागपुर का मारबत त्योहार एक अद्वितीय 140 वर्षों में भी अधिक पुरानी सांस्कृतिक परंपरा है, जो पोला के अगले दिन (अगस्त/सितंबर) मनाया जाता है। यह उत्सव मुख्य रूप से नागपुर में ही मनाया जाता है और विदर्भ क्षेत्र की सांस्कृतिक विरासत का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। इसमें काली और पीली मारबत के रूप में बुरी ताकतों और सामाजिक समस्याओं के पुतलों का जुलूस निकाला जाता है। यह त्योहार शहर से नकारात्मकता, सामाजिक बुराइयों, और बीमारियों को दूर करने की एक सामूहिक भावना का प्रतीक है।

★ **व्यापक वन आवरण और बाघों से जुड़ाव-** नागपुर के आसपास कई राष्ट्रीय उद्यान और टाइगर रिजर्व हैं, जिस कारण इसे भारत की ''बाघ राजधानी'' भी कहते हैं। नागपुर जिला उच्च घनत्व वाले बाघ परिदृश्य के निकट स्थित है । ''विदर्भ'' क्षेत्र कई महत्वपूर्ण बाघ अभयारण्यों जैसे ताडोबा-अंधारी, पेंच, मेलघाट को जोड़ता है। नागपुर

मध्य भारत में बाघ संरक्षण और वन्यजीव पर्यटन के लिए एक प्रशासनिक और लॉजिस्टिक्स केंद्र के रूप में कार्य करता है। वन्यजीव पर्यटक अक्सर नागपुर को ताडोबा-अंधारी और पेंच के प्रवेश द्वार के रूप में उपयोग करते हैं।

★ नागपुर में स्थित बालासाहेब ठाकरे गोरेवाड़ा अंतर्राष्ट्रीय प्राणी उद्यान (539 हेक्टेयर) भारत के सबसे बड़े प्राणी उद्यानों में से एक है, जिसे 26 जनवरी 2021 को जनता के लिए खोला गया। यहाँ मुख्य आकर्षण इंडियन सफारी (बाघ, तेंदुआ, भालू), जिप्सी/बस सफारी, और प्राकृतिक वनों में जानवरों को देखना है, जो वन्यजीव प्रेमियों के लिए एक प्रमुख पर्यटन स्थल है।

★ नागपुर में स्थित दीक्षाभूमि में, वर्ष 1956 में भारतरत्न बाबासाहेब अंबेडकर ने अपने अनुयायियों के साथ बौद्ध धर्म अपनाया था, जो एक बहुत बड़ा और महत्वपूर्ण बौद्ध स्मारक है। पश्चिमी नागपुर में रामदास पेठ के निकट दीक्षाभूमि स्थित है। हर साल बौद्ध धम्म के अनुयायी लाखों की संख्या में आते हैं। इसी कारण यह स्थान तीर्थस्थल के तौर पर जाना जाता है। इस स्थान पर एक मेमोरियल भी बना हुआ है। सांची के स्तूप जैसी एक शानदार इमारत का यहां निर्माण किया गया है। इस इमारत के प्रत्येक खंड में एक साथ 5000 भिक्षु ठहर सकते हैं। दीक्षाभूमि दुनिया के सभी बौद्ध स्तूपों में सबसे बड़ा खोखला स्तूप है।

★ नागपुर में कई खूबसूरत झीलें और तालाब हैं। प्रमुख झीलों में 200 साल से अधिक पुरानी फुटाला झील, अंबाझारी झील (सबसे बड़ी झील) और गांधी सागर (शुक्रवारी) झील शामिल हैं। अन्य लोकप्रिय जलाशयों में गोरेवाड़ा झील, खिंडसी झील और खेकरनाला शामिल हैं, जो प्रकृति प्रेमियों के लिए आदर्श है।

★ **सीताबर्डी किला-** यह किला दो पहाड़ियों पर बना है। किले को 1857 में एक ब्रिटिश अफसर ने बनवाया था। तब से यह किला नागपुर आने वाले सैलानियों को लुभा रहा है।

★ नागपुर के मुख्य स्टेडियमों में जामथा स्थित अत्याधुनिक विदर्भ क्रिकेट एसोसिएशन (वीसीए) स्टेडियम, धंतोली का ऐतिहासिक यशवंत स्टेडियम और जवाहरलाल नेहरू (JLN) स्टेडियम शामिल हैं।

★ **पोद्दारेश्वर राम मंदिर -** इस मंदिर का निर्माण राजस्थान के पोद्दार परिवार के श्री जमुनाधर पोद्दार ने 1923 ई. में करवाया था। मंदिर में भगवान राम और शिव की प्रतिमाएं स्थापित हैं। सफेद संगमरमर और लाल बलुआ पत्थर से बने इस मंदिर में खूबसूरत नक्काशी की गई है। राम नवमी को होने वाली राम जन्मोत्सव शोभायात्रा के दौरान यहां बड़ी संख्या में श्रद्धालु एकत्रित होते हैं।

★ **स्वामी नारायण मन्दिर -** नागपुर शहर के पूर्व में यह स्वामी नारायण भगवान का मन्दिर है । यह मन्दिर अत्यंत सुंदर तरीके से बनाया गया है।

★ नागपुर के समीप कई दर्शनीय ऐतिहासिक, धार्मिक, पुरातात्विक और पर्यटन स्थल जैसे अदासा, रामटेक, मनसर पुरातात्विक स्थल, खेकरानाला, मरकड, नगरधन, नवेगांव बांध, सेवाग्राम इत्यादि स्थित है।

❑ ❑ ❑

नागपुर : स्वतंत्रता संग्राम का गौरवशाली केंद्र

श्री मो. अवेश अंसारी
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

स्वतंत्रता आंदोलन में नागपुर (महाराष्ट्र) की भूमिका काफी महत्वपूर्ण रही है। नागपुर, जो उस समय मध्य प्रांत की राजधानी था, ब्रिटिश काल में राजनीतिक, सामाजिक और क्रांतिकारी गतिविधियों का प्रमुख केंद्र बना। यहाँ कई ऐतिहासिक घटनाएँ घटीं, जिन्होंने राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम को नई दिशा दी। नीचे इस विषय पर एक संक्षिप्त लेकिन पूर्ण लेख प्रस्तुत है:

स्वतंत्रता आंदोलन में नागपुर, महाराष्ट्र की भूमिका

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में महाराष्ट्र का योगदान हमेशा से उल्लेखनीय रहा है। इसमें नागपुर शहर ने विशेष स्थान बनाया, क्योंकि यह मध्य भारत का राजनीतिक केंद्र था। 19 वीं सदी के अंत और 20 वीं सदी की शुरूआत में नागपुर क्रांतिकारी विचारों, कांग्रेस की गतिविधियों और गांधीवादी आंदोलनों का केंद्र रहा।

1. 1857 की क्रांति में योगदान

1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम में भी नागपुर सक्रिय रहा। भोंसले राजवंश के पतन के बाद अंग्रेजों ने नागपुर पर कब्जा कर लिया था। 1857 में यहाँ कई क्रांतिकारियों ने विद्रोह किया। ब्रिटिशों ने चार क्रांतिकारियों को जुम्मा गेट (आज का गांधी गेट) पर फांसी दी, लेकिन इससे आंदोलन की ज्वाला और भड़की। नागपुर के लोगों ने दमन के बावजूद संघर्ष जारी रखा।

2. 1920 का ऐतिहासिक कांग्रेस अधिवेशन

नागपुर की सबसे बड़ी उपलब्धि दिसंबर 1920 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का वार्षिक अधिवेशन था। इस अधिवेशन की अध्यक्षता सी. विजयराघवाचारी ने की।

इस सत्र में असहयोग आंदोलन को औपचारिक रूप से मंजूरी दी गई।

कांग्रेस का लक्ष्य अब केवल ''स्वशासन'' नहीं रहा, बल्कि पूर्ण स्वराज (पूर्ण स्वतंत्रता) को शांतिपूर्ण और वैधानिक साधनों से प्राप्त करना तय हुआ।

गांधीजी के नेतृत्व को पूर्ण रूप से स्वीकार किया गया और कांग्रेस ने जन-आंदोलन की राह अपनाई।

संगठनात्मक बदलाव हुए: प्रांतीय कांग्रेस कमेटियाँ भाषाई आधार पर बनीं, वर्किंग कमिटी गठित हुई और सदस्यता शुल्क घटाकर 4 आने किया गया।

यह अधिवेशन स्वतंत्रता संग्राम में एक नया अध्याय था, जिसने असहयोग आंदोलन को राष्ट्रीय स्तर पर मजबूती दी।

3. 1923 का झंडा सत्याग्रह

1923 में नागपुर में झंडा सत्याग्रह हुआ, जो स्वतंत्रता संग्राम का महत्वपूर्ण हिस्सा था। ब्रिटिश सरकार ने सार्वजनिक स्थानों पर तिरंगे को फहराने पर रोक लगाई थी। नागपुर के क्रांतिकारियों और कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने बड़े पैमाने पर सत्याग्रह किया।

हजारों लोग जेल गए। यह आंदोलन पूरे देश में फैला और तिरंगे के सम्मान की लड़ाई का प्रतीक बना।

4. अन्य महत्वपूर्ण योगदान

डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार (राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के संस्थापक) नागपुर के निवासी थे। वे असहयोग आंदोलन, जंगल सत्याग्रह और अन्य आंदोलनों में सक्रिय रहे। उन्होंने 1925 में आर.एस.एस. की स्थापना नागपुर में की, जो राष्ट्रवादी विचारधारा को मजबूत करने में सहायक हुआ।

1920-22 के असहयोग आंदोलन में नागपुर से बड़ी संख्या में छात्रों, वकीलों और व्यापारियों ने भाग लिया। विदेशी कपड़ों की होली जलाई गई और स्वदेशी को बढ़ावा दिया गया।

भारत छोड़ो आंदोलन (1942) में भी नागपुर में बड़े प्रदर्शन हुए। यहाँ के कार्यकर्ताओं ने भूमिगत गतिविधियाँ चलाईं। महात्मा गांधी का नागपुर से गहरा नाता था। वे कई बार यहाँ आए और बाद में सेवाग्राम (वर्धा, पास में) को अपना आश्रम बनाया।

नागपुर डॉ. भीमराव अंबेडकर की दीक्षा भूमि भी है (1956 में बौद्ध धर्म ग्रहण), जो सामाजिक स्वतंत्रता का हिस्सा था।

निष्कर्ष :

नागपुर केवल एक शहर नहीं था, बल्कि स्वतंत्रता संग्राम का रणक्षेत्र था। यहाँ से निकले फैसले और आंदोलन पूरे देश को प्रभावित करते थे। 1920 का कांग्रेस अधिवेशन, झंडा सत्याग्रह और क्रांतिकारी गतिविधियाँ नागपुर को स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में अमर बनाती हैं। आज भी गांधी गेट, आर.एस.एस. मुख्यालय और अन्य स्थल उस गौरवशाली इतिहास की याद दिलाते हैं। नागपुर ने सिद्ध किया कि महाराष्ट्र का मध्य भाग भी स्वतंत्रता की लड़ाई में पीछे नहीं था- यह आगे था और प्रेरणा स्रोत बना रहा।

जय हिंद!

❑❑❑

नागपुर के त्योहार

सुश्री नीना वर्मा
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी.

नागपुर के त्योहार जानने के पहले आइए हम कुछ इस शहर का इतिहास जान लें। नागपुर का इतिहास गोंड राजा बख्त बुलंद शाह द्वारा 18 वीं सदी की शुरुआत में इसकी स्थापना से जुड़ा है, फिर यह मराठा साम्राज्य का हिस्सा बना और अंग्रेजों के अधीन मध्य प्रांतों की राजधानी बना। आजादी के बाद, इसे महाराष्ट्र की उपराजधानी बनाया गया, और आज यह अपने संतरा, धार्मिक स्थलों और तेजी से विकास के लिए जाना जाता है, और इसका नाम नाग नदी के नाम पर पड़ा है। जिरो माइल एक स्मारक है और इसे भारत वर्ष का केंद्र बिंदु मना जाता है। इसके अलावा यहां राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का मुख्यालय भी स्थित है। और एक प्रमुख आकर्षण है दीक्षा भूमि जहां पहली बार बाबा साहेब अंबेडरजी ने धर्म परिवर्तन की दीक्षा दी थी।

वैसे तो यहां हर त्योहार बहुत अच्छे से मानाए जाते हैं पर कुछ त्योहार विशेष रूप से यहां की परम्परा का हिस्सा बन चुके हैं।

1) रामनवमी शोभायात्रा

रामनवमी तो वैसे हर राममंदिर में बड़े हर्ष और उल्लास से मनाई जाती है पर श्री पोद्दारेश्वर राम मंदिर की पूजा और शोभायात्रा की बात ही निराली है। यह नागपुर की सबसे

पुरानी और भव्य शोभा यात्रा मानी जाती है, जो लगभग 10-16 किलोमीटर का मार्ग तय करती है। आइए इस मंदिर का इतिहास भी जान लें।

मंदिर का निर्माण वर्ष 1923 में श्री जमनाधर पोद्दार द्वारा कराया गया था, लेकिन शोभा यात्रा की परंपरा इसके कई दशकों बाद शुरू हुई।

रामनवमी शोभायात्रा की परंपरा 1966-1967 में शुरू हुई और तबसे यह एक पसंदीदा वार्षिक कार्यक्रम बन गया है। श्री पोद्दारेश्वर राम मंदिर से निकली शोभायात्रा 10-16 किमी के मार्ग का लम्बा सफर तय करती है । शोभायात्रा दोपहर में श्री पोद्दारेश्वर राम मंदिर से शुरु होती है और देर रात यहीं पर समाप्त होती है । हजारों लोग इस भव्य जुलूस को देखने और इसमें भाग लेने के लिए इकट्ठा होते

हैं, जिससे यह एक शहर व्यापी उत्सव में बदल जाता है।

शोभायात्रा तब शुरू होती है जब भक्त श्रीराम के रथ को खींचते हैं, जिसके साथ रामायण और अन्य हिंदू धर्म ग्रंथों के दृश्यों को दर्शाने वाली सुंदर झांकियों से सजे सैकड़ों ट्रक होते हैं। कभी कभी सिर्फ धार्मिक ही नहीं बल्कि समकालीन विषयों पर भी झांकियां होती हैं। दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर देने वाले फायर शो और रंगीन आतिशबाजी द्वारा भव्यता और भी बढ़ जाती है। जब शोभायात्रा प्रमुख चौराहों से निकलती है तब इसमें शामिल सभी भक्तजनों का स्वागत शर्बत/लस्सी और अन्य खाद्य पदार्थों से किया जाता है। सभी व्यापारी अपनी क्षमतानुसार हर चौरस्ते की सजावट भी करवाते हैं। यह शोभायात्रा सब से प्रमुख होती है। इसके अलावा श्री राम मंदिर, रामनगर से भी एक थोड़ी छोटी शोभा यात्रा निकलती है जो सिर्फ पश्चिम नागपुर तक ही सिमित रहती है। बाकी शहरों का तो पता नहीं पर नागपुर की श्री पोद्दारेश्वर राम मंदिर की शोभायात्रा 55-60 सालों से हर वर्ष नागपुरवासियों का मन मोह रही है।

2) **मारबत**

नागपुर का मारबत उत्सव एक अनूठी और प्राचीन परंपरा है। इसकी शुरुआत 1880 के दशक में ब्रिटिश गुलामी के खिलाफ विरोध के रूप में हुई थी जिसमें काली और पीली मारबत (मिट्टी और कागज़ के पुतले) बनाकर जुलूस निकाला जाता है, जिनका दहन कर सामाजिक बुराइयों (जैसे महंगाई, भ्रष्टाचार, महामारी) और नकारात्मकता का प्रतीक रूप में अंत किया जाता है, यह उत्सव नागपुर की सांस्कृतिक विरासत है जो पिठोरी अमावस्या के दूसरे दिन मनाया जात्ता है और इसे तान्हा पोला भी कहते हैं। पिठोरी अमावस्या के दिन किसान अपने बैलों को सजा कर उनकी पूजा करते है और उसके दूसरे दिन मारबत का जुलूस निकलता है।

यह बुराई पर अच्छाई की विजय का प्रतीक है, जिसमें बड़े पुतलों (मारबत) और छोटे व्यंग्यात्मक पुतलों (बड़ग्या) का जुलूस निकलता है और जलाया जाता है। इस मारबत में दो रंगों के पुतले होते हैं, एक को कहते हैं, काली मारबत: यह पूतना राक्षसी या ब्रिटिश शासन के खिलाफ लोगों के गुस्से का प्रतीक मानी जाती है।और दूसरी है पीली मारबत, यह देवी का रूप और महामारी व बुराइयों का प्रतीक मानी जाती है, जिसे तरहाने तेली समुदाय बनाता है। बड़ग्या: ये समसामयिक सामाजिक मुद्दों (अपराध, भ्रष्टाचार) पर व्यंग्य करते छोटे पुतले होते हैं, जिन्हें बच्चे और बड़े बनाते हैं। यह नागपुर की ऐतिहासिक

विरासत का हिस्सा है और सामाजिक जागरूकता बढ़ाने का एक अनोखा मंच है।

3) धम्म चक्र प्रवर्तन दिन

धम्म चक्र प्रवर्तन दिन वह ऐतिहासिक दिन है जब 14 अक्टूबर 1956 को डॉ. बी. आर. अंबेडकर और उनके लाखों अनुयायियों ने नागपुर की दीक्षाभूमि पर हिंदू धर्म छोड़कर बौद्ध धर्म अपनाया था। यह दिन अशोक विजयादशमी (दशहरा) के साथ मनाया जाता है, जो सम्राट अशोक द्वारा बौद्ध धर्म अपनाने की घटना से जुड़ा है और यह भारत में बौद्ध धर्म के पुनरुत्थान और समानता के लिए डॉ. अंबेडकर के संघर्ष का प्रतीक है, जिसे हर साल लाखों लोग इस दिन दीक्षाभूमि पर मनाते हैं और बौद्ध धर्म अपनाते हैं।

नागपुर की दीक्षाभूमि का स्थान धम्म चक्र स्तूप के नाम से भी जाना जाता है, जिसका निर्माण 2001 में हुआ और यह धौलपुर बलुआ पत्थर व संगमरमर से बना एक भव्य स्मारक है, जो समानता और बौद्ध धर्म के पुनरुत्थान का केंद्र है। डॉ. अंबेडकर ने नागपुर को चुना क्योंकि यह नाग लोगों (शुरुआती बौद्ध अनुयायियों) की भूमि थी और यह दिन सम्राट अशोक द्वारा बौद्ध धर्म अपनाने का प्रतीक था।

कुछ सालों से धम्म चक्र प्रवर्तन दिन कुछ लोग विजयादशमी के दिन मनाते हैं और कुछ 14 अक्टूबर को भी मनाते हैं । दिन कोई भी हो आस्था और विश्वास वही रहता है।

ऊपर जो मैंने वर्णन किया है वो नागपुर की विशेषता है। इसे त्योहार कहें या सामाजिक उत्सव पर यह सभी पर्व नागपुर की पहचान हैं ।

❑ ❑ ❑

नागपुर की कला एवं लोक संस्कृति

श्रीमती वर्षा मुकेश खलाने
पत्नी - श्री मुकेश सीताराम खलाने, वरिष्ठ लेखापरीक्षक
मुंबई शाखा कार्यालय

नागपुर जिसे व्यापक रूप से 'संतरा शहर' के नाम से जाना जाता है। इसकी आधुनिक प्रगति के भीतर परंपरा, विरासत और सांस्कृतिक गौरव से ओतप्रोत एक समृद्ध शहर बसा हुआ है। वर्षों से, नागपुर कला और सांस्कृतिक कार्यक्रमों के केंद्र के रूप में उभरा है, जो न केवल स्थानीय प्रतिभाओं को प्रदर्शित करते हैं, बल्कि राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय कलाकारों को भी मंच प्रदान करते हैं।

1. कालिदास महोत्सव

नागपुर के सांस्कृतिक कैलेंडर के प्रमुख आयोजनों में से एक, कालिदास महोत्सव महान संस्कृत कवि और नाटककार कालिदास को समर्पित है। यह बहु-दिवसीय आयोजन साहित्य, शास्त्रीय नृत्य, नाटक और संगीत का संगम है, जो भारत की कलात्मक परंपराओं का एक समृद्ध उत्सव प्रस्तुत करता है।

देश भर के प्रख्यात कलाकार मंच पर अपनी प्रस्तुति देते हैं, जिनमें कथक और भरतनाट्यम से लेकर हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत तक सब कुछ शामिल है। प्रस्तुतियों के अलावा, महोत्सव में सेमिनार, कार्यशालाएं और प्रदर्शनियां भी शामिल हैं, जो इसे एक संपूर्ण सांस्कृतिक अनुभव बनाती हैं।

2. ऑरेंज सिटी क्राफ्ट मेला और लोक नृत्य महोत्सव

हर सर्दियों में, नागपुर ऑरेंज सिटी क्राफ्ट मेला और लोक नृत्य महोत्सव की मेजबानी करता है, जहाँ कला और परंपरा का सबसे रंगीन संगम देखने को मिलता है। विभिन्न राज्यों के कारीगर अपने हस्तशिल्प - हाथ से बुने हुए वस्त्र, मिट्टी के बर्तन, धातु शिल्प और आदिवासी कला-लेकर आते हैं, जिससे यह स्थल भारतीय विरासत का एक जीवंत संग्रहालय बन जाता है।

शामें लावणी, बिहू, घूमर और कालबेलिया जैसे मनमोहक लोक नृत्यों से सराबोर हो जाती हैं। यह केवल एक कार्यक्रम में भाग लेना नहीं है, बल्कि एक ऐसा अनुभव है जो आपको ग्रामीण भारत की आत्मा से जोड़ता है।

3. लोकमत साहित्य महोत्सव

पुस्तक प्रेमियों और उभरते लेखकों के लिए लोकमत साहित्य महोत्सव एक अनिवार्य आयोजन है। प्रख्यात लेखकों, कवियों, पत्रकारों और विचारकों को एक साथ लाकर, यह महोत्सव साहित्य, संस्कृति, राजनीति और समाज पर चर्चा के लिए एक मंच प्रदान करता है।

पैनल और कार्यशालाएँ अक्सर द्विभाषी होती हैं, जो अंग्रेजी और मराठी दोनों भाषाओं में आयोजित की जाती हैं, जिससे यह आयोजन समावेशी और आकर्षक बन जाता है। चाहे

आप नई पुस्तकें खोजना चाहते हों, अपने पसंदीदा लेखक से मिलना चाहते हों, या केवल विचारोत्तेजक चर्चाओं में भाग लेना चाहते हों, यह महोत्सव नागपुर के सांस्कृतिक परिदृश्य का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है।

4. विदर्भ साहित्य सम्मेलन

नागपुर हमेशा से मराठी साहित्य का गढ़ रहा है, और विदर्भ साहित्य सम्मेलन इसी विरासत का प्रमाण है। क्षेत्र के साहित्यिक संगठनों द्वारा आयोजित यह सम्मेलन कवियों, लेखकों, आलोचकों और साहित्य प्रेमियों को आकर्षित करता है।

कविता पाठ से लेकर समकालीन साहित्य पर वाद-विवाद तक, यह सम्मेलन उन लोगों के लिए एक बौद्धिक दावत है जो शब्दों को महत्व देते हैं। यह विदर्भ की गहरी सांस्कृतिक संरचना और मराठी साहित्य में इसके योगदान को समझने का एक शानदार अवसर है।

5. चितनाविस केंद्र में संगीत और नृत्य कार्यक्रम

कला और संस्कृति की बात करें तो, चितनाविस केंद्र नागपुर के सबसे प्रतिष्ठित केंद्रों में से एक है। अपने सुरुचिपूर्ण वातावरण के लिए प्रसिद्ध, यह केंद्र नियमित रूप से शास्त्रीय संगीत कार्यक्रम, ग़ज़ल संध्याएँ, नृत्य प्रस्तुतियाँ और नाट्य प्रदर्शन आयोजित करता है।

यहाँ का वातावरण हर प्रस्तुति को और भी प्रभावशाली बना देता है... चाहे वह सितार वादन हो, भावपूर्ण ग़ज़ल संध्या हो या भरतनाट्यम नृत्य प्रस्तुति। नागपुर के कई लोगों के लिए, चितनाविस केंद्र में कार्यक्रमों में भाग लेना संस्कृति का भव्य उत्सव मनाने का पर्याय बन गया है।

6. आदिवासी कला एवं सांस्कृतिक प्रदर्शनियाँ

नागपुर की गोंडिया और गढ़चिरोली जैसे आदिवासी क्षेत्रों से निकटता ने इसकी सांस्कृतिक पहचान को गहराई से प्रभावित किया है। वर्ष भर में आयोजित होने वाले कई कार्यक्रम गोंड कला, आदिवासी शिल्प और पारंपरिक प्रदर्शनों को प्रदर्शित करते हैं, जिससे आगंतुकों को स्वदेशी विरासत का अनुभव करने का अवसर मिलता है।

ये प्रदर्शनियाँ न केवल स्थानीय कारीगरों को बढ़ावा देती हैं, बल्कि आधुनिक शहरी दर्शकों और सदियों पुरानी आदिवासी परंपराओं के बीच एक सेतु का काम भी करती हैं। यह विरासत का जश्न मनाने का एक प्रामाणिक तरीका है, जिसे अक्सर मुख्यधारा के सांस्कृतिक उत्सवों में नजरअंदाज कर दिया जाता है।

महाराष्ट्र में स्थित नागपुर, मराठी, विदर्भियाई और आदिवासी परंपराओं के मिश्रण को प्रतिबिंबित करने वाला एक जीवंत सांस्कृतिक केंद्र है। इसकी प्रमुख विशेषताओं में अनूठा मरबत उत्सव (पुतलों का जुलूस), पारंपरिक संथाल भित्तिचित्र और लावणी, पोवाड़ा और बंजारा होली जैसी समृद्ध लोक कलाएं शामिल हैं। यह शहर दक्षिण मध्य क्षेत्र

सांस्कृतिक केंद्र (एससीज़ेडीसीसी) के माध्यम से क्षेत्रीय विरासत के संरक्षण का केंद्र है।

7. गणेश उत्सव और सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ

नागपुर की सांस्कृतिक मार्गदर्शिका गणेश उत्सव का उल्लेख किए बिना अधूरी है, जो केवल धार्मिक श्रद्धा से कहीं बढ़कर एक उत्सव है। इस दौरान शहर संगीत, नृत्य, नुक्कड़ नाटकों और कला प्रतियोगिताओं से जीवंत हो उठता है।

शहरभर में सांस्कृतिक मंडल पारंपरिक नाटकों से लेकर समकालीन संगीत कार्यक्रमों तक, हर प्रकार की प्रस्तुतियों का आयोजन करते हैं। उत्सव का माहौल विरासत के साथ सहजता से घुलमिल जाता है, जिससे गणेश उत्सव नागपुर के सबसे जीवंत सांस्कृतिक अनुभवों में से एक बन जाता है।

8. इन आयोजनों में क्यों शामिल हों?

कला और संस्कृति के आयोजन मात्र मनोरंजन से कहीं अधिक हैं--- ये किसी शहर की आत्मा की झलक दिखाते हैं। नागपुर में, यह आयोजन:

शास्त्रीय कला रूपों को जीवित रखकर परंपराओं का संरक्षण करते हैं।

कलाकारों को अपनी प्रतिभा दिखाने का मंच देकर स्थानीय प्रतिभाओं को बढ़ावा देते हैं।

भारतभर से कलाकारों और दर्शकों को लाकर सांस्कृतिक आदान-प्रदान को प्रोत्साहित करते हैं।

साझा विरासत के माध्यम से लोगों को जोड़ने वाले स्थान बनाकर समुदाय का निर्माण करते हैं।

अंतिम विचार

नागपुर केवल संतरों और बढ़ते उद्योगों का शहर नहीं है--- यह कहानियों, गीतों और परंपराओं का भी शहर है। साहित्यिक उत्सवों से लेकर लोक नृत्यों तक, आदिवासी कला प्रदर्शनियों से लेकर शास्त्रीय संगीत की रातों तक, हर आयोजन इसकी सांस्कृतिक पहचान में एक नया आयाम जोड़ता है।

इसलिए, नागपुर में हों, तो केवल बाजारों या स्मारकों का भ्रमण न करें। इसके अलावा कला और संस्कृति के आयोजनों को देखें। कला और संस्कृति का नया अनुभव मिलेगा जो रंगीन और यादगार होगी।

❑ ❑ ❑

विदर्भ के विस्मृत कलमकार – यादव माधव काले एवं राजा बढ़े

श्रीमती नयना इस्सर
कनिष्ठ अनुवादक

नागपुर सही मायनों में अपरिमितताओं की भूमि है। एक ओर प्राकृतिक संपदाओं से विभूषित यहाँ की उर्वर मिट्टी सृजनशीलता को चरितार्थ करती है तो दूसरी ओर विविध क्षेत्रों, धर्म-संस्कृतियों के लोगों का यूं सामंजस्यपूर्ण सहअस्तित्व वास्तव में इस शहर को 'कोस्मोपोलिटन' बनाता है। सन् 1702 में राजा बख्त बुलंद शाह के द्वारा स्थापित यह नगरी बाद में चल कर भोंसले वंश के मराठा साम्राज्य के सर का ताज बनी। ज़ीरो माइल के रूप में यह भारत का भौगोलिक केंद्र होने के साथ साथ मध्य भारत का राजनैतिक एवं वाणिज्यिक केंद्र भी है।

साहित्य की दृष्टि से मराठी, हिंदी एवं उर्दू की त्रिवेणी के रूप में यहा की साहित्यिक विरासत निरंतर प्रवाहमय है। आदिकालीन विदर्भ (जो बाद में चल कर नागपुर, अमरावती, अकोला, चंद्रपुर, वर्धा, बुलढाणा, यवतमाल, भंडारा, गोंदिया, वाशिम और गढ़चिरौली में विभाजित हो गया) कवि धनपाल, स्वयंभू, पुष्पदत्त की कर्मभूमि रह चुका है। आधुनिक समय में ग्रेस (माणिक सीताराम गोडघाटे), सुरेश भट, नामदेव कांबले, डॉ सदानंद देशमुख, प्रतिमा इंगोले, आदि ने इस साहित्यिक प्रवाह को गति प्रदान की।

श्री यादव माधव काले

इस अनूठी समृद्ध साहित्यिक विरासत में एक नाम श्री यादव माधव काले उर्फ अन्नासाहेब काले का भी है। वे विदर्भ के पहले विद्वान हैं जिन्होंने लोनार झील के पुराने इतिहास का पता लगाया। इनका जन्म 18 फरवरी, 1882 को लोनार में हुआ था और उन्होंने अपनी शुरुआती पढ़ाई मेहेकर में पूरी की। मैट्रिक पूरा करने के बाद उन्होंने अध्यापक के पद पर मेहेकर, वाशिम, एलिचपुर, यवतमाल और वर्धा में काम किया। उनकी पहली किताब 'लोनार दर्शन' 1904 में मुद्रित हुई जब वे सिर्फ़ 22 साल के थे। उनकी दूसरी किताब 'गोंड राजचा इतिहास' (गोंड वंश का इतिहास) 1905 में पब्लिश हुई।जब वे वर्धा में एक शिक्षक के रूप में काम कर रहे थे, तब उन्होंने नागपुर में एलएलबी में प्रवेश लिया और 1909 में एलएलबी पूरा किया। 1910 से उन्होंने एक वकील के रूप में अभ्यास करना शुरू किया और 1919 में बुलढाणा में बस गए। उन्होंने प्राचीन इतिहास और अनुसंधान में अपनी रुचि जारी रखी और 1924 में वरहादचा

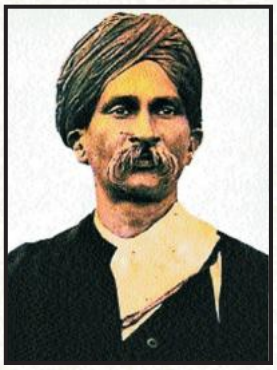

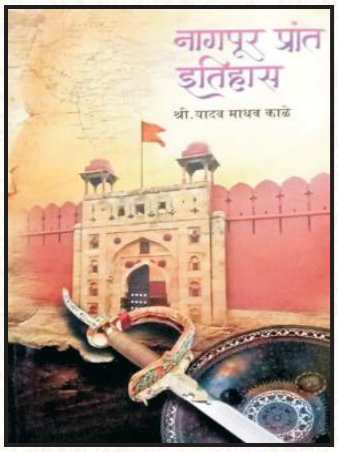

इतिहास, 1934 में नागपुर प्रांतचा इतिहास जैसी किताबें लिखीं।

यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि श्री काले द्वारा रचित 'नागपूर प्रांतचा इतिहास' से पूर्व नागपुर के उद्भव एवं विकास के संबंध में कोई ऐतिहासिक पुनराख्यान नहीं है। यह पुस्तक विदर्भ तथा नागपुर के इतिहास पर एक महत्वपूर्ण संदर्भ ग्रंथ है। यह पुस्तक भोसले वंश के उदय, गोंड राजाओं के अंत, राघोजी प्रथम के कार्यों, पेशवाओं और अंग्रेजों के अंतर्संबंध, नागपुर का विकास, यहाँ की प्रशासनिक नीतियाँ, सामाजिक परिस्थितियाँ और महाराष्ट्र के एकीकरण में नागपुर की भूमिका का विस्तृत विवरण प्रस्तुत करती है। इस किताब में ब्यौरेवार चित्रण है कि नागपुर शहर कैसे बसा, किस प्रकार बख़्त बुलंद शाह द्वारा नाग नदी के तट पर सामाजिक जीवन का अधिवास प्रारंभ हुआ और तत्कालीन राजनैतिक परिस्थितियों में तपकर नागपुर महाराष्ट्र की उपराजधानी के पद पर आसीन हुई । यह पुस्तक विदर्भ के सांस्कृतिक एवं राजनीतिक इतिहास के जानकारों के लिए एक विशिष्ट ऐतिहासिक कलाकृति है जिसमें नागपुर की गौरवयात्रा का विस्तृत उल्लेख है।

श्री राजा नीलकंठ बढे

नागपुर में जन्मे, कवि-गीतकार राजा बढे एक प्रसिद्ध मराठी कवि, गीतकार, संपादक एवं लेखक थे। उन्होने ऑल इंडिया रेडियो में काम करने के साथ साथ कई यादगार मराठी कविताएं एवं गीत लिखे हैं। राजा बढे को उनकी ओजस्वी और देशभक्तिपूर्ण मराठी काव्य शैली के लिए आज भी याद किया जाता है। आकाशवाणी में कई सालों तक काम करने के बाद, वे फ़िल्म व्यवसाय में आ गए। उन्होंने ''स्वानंदचित्र'' नाम की संस्था बनाई और संभाजी महाराज के जीवन पर ''रायगढ़ राजबंदी'' नाम की फ़िल्म बनाई। बढे ने मराठी फिल्म 'राम राज्य' और बॉलीवुड फिल्म 'अंगूरी' के लिए भी गाने लिखे।

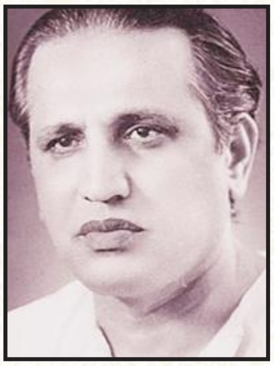

'जय जय महाराष्ट्र माझा' बढे द्वारा 1960 में लिखा गया था जब महाराष्ट्र राज्य बना था। इसे गीत के रूप में पहली बार 1 मई, 1960 को प्रस्तुत किया गया था, जिसे अब महाराष्ट्र दिवस के रूप में मनाया जाता है। प्रसिद्ध लोक गायक शाहिर साबले ने सबसे पहले यह गाना शिवाजी पार्क (दादर) में एक फंक्शन में गाया था, जब राज्य के पहले मुख्यमंत्री यशवंतराव चव्हाण भी दर्शकदीर्घा में थे। यह नागपुर प्रांत के लिए अत्यंत गर्व का विषय है कि राजा बढ़े की इस अतुलनीय रचना को महाराष्ट्र के राज्य गीत के रूप में उसका उचित सम्मान मिला है।

प्रस्तुत है 'जय जय महाराष्ट्र माझा'का हिंदी भावानुवाद।

जय जय महाराष्ट्र माझा, गर्जा महाराष्ट्र माझा।।

भिती न आम्हा तुझी मुळीही गडगडणाऱ्या नभा

अस्मानाच्या सुलतानीला जबाब देती जिभा

सह्याद्रीचा सिंह गजर्तो शिव शंभू राजा

दरी दरीतून नाद गुंजला महाराष्ट्र माझा।

जय जय महाराष्ट्र माझा, गर्जा महाराष्ट्र माझा।।

काळ्या छातीवरी कोरली, अभिमानाची लेणी

पोलादी मनगटे खेळती, खेळ जीव घेणी

दारीद्र्यांच्या उन्हात शिजला

निढळाच्या घामाने भिजला

देश गौरवासाठी झिजला

दिल्लीचे ही तख्त राखितो, महाराष्ट्र माझा।

जय जय महाराष्ट्र माझा, गर्जा महाराष्ट्र माझा।।

जय जय महाराष्ट्र माझा।।

भावानुवाद-

मेरे महाराष्ट्र की जयकार हो, मेरे महाराष्ट्र की गर्जना/गूंज हर ओर हो।।

हे आसमान के गरजते तूफान! हम तुमसे नहीं डरते। हमारी वाणी (वीरता) तुम्हारी ओर से आने वाली किसी भी सल्तनत या अन्याय का मुहतोड़ जवाब देने मे सक्षम है।

सहयाद्रि पर्वतशृंखला में दहाड़ते हुए सिंह (छत्रपति शिवाजी महाराज एवं छत्रपति शंभाजी महाराज) की गर्जना से सम्पूर्ण घाटी महाराष्ट्र के गौरव एवं शौर्य की हुंकार से भर उठी है।

यहा की काली धरती को तराशकर उसमें से हमने अभिमानरूपी गहने गढ़े हैं

मराठा के फौलादी बाहु अपने स्वाभिमान एवं माटी की रक्षा हेतु किसी भी प्रकार का घातक जोखिम उठा सकते है

दरिद्रता के ताप में तपकर

श्रमजल से सीक्त मस्तक लिए

देश के गौरव हेतु अपना सर्वस्व त्याग दिया

महाराष्ट्र ने ही दिल्ली के सिंहासन की रक्षा कर देश के संचालन को सुदृढ़ बनाया।

मेरे महाराष्ट्र की जयकार हो, मेरे महाराष्ट्र की गर्जना/गूंज हर ओर हो।।

मेरे महाराष्ट्र की जयकार हो, मेरे महाराष्ट्र की गर्जना/गूंज हर ओर हो।।

❑❑❑

नागपुर : एक नजर में

राजेश कुमार कटरे
वरिष्ठ अनुवादक

नागपुर, जिसे भारत की संतरा नगरी और महाराष्ट्र की उपराजधानी के रूप में जाना जाता है, यह भारत के महाराष्ट्र राज्य का तीसरा सबसे बड़ा शहर है। यह महाराष्ट्र और भारत का एक प्रमुख नगर है और भारत के मध्य में स्थित है। नाग नदी के किनारे स्थित यह शहर ऐतिहासिक रूप से गोंड, मराठा (भोंसले) और ब्रिटिश शासकों के शासन के बीच महत्वपूर्ण व्यापारिक केंद्र रहा है।

नागपुर भारत का 13वां व विश्व का 114वां सबसे बड़ा शहर हैं। यह नगर संतरों के लिए मशहूर है। इसलिए इसे 'संतरा नगरी' भी कहा जाता है । हाल ही में इस शहर को देश के सबसे स्वच्छ व सुंदर शहर का ईनाम मिला है। नागपुर भारत देश का दूसरे नंबर का हरित शहर माना जाता है। नागपुर को जनवरी 2018 में स्वच्छ भारत मिशन के तहत खुले में शौच मुक्त शहर घोषित किया गया था और उसी वर्ष स्वच्छ सर्वेक्षण 2018 में नवाचार और सर्वोत्तम प्रथाओं के लिए सम्मानित किया गया था।

नागपुर शहर की स्थापना का इतिहास :

नागपुर की स्थापना देवगढ़ के गोंड राजा बख्त बुलंद शाह ने 1703 ई. में की थी। इस शहर की स्थापना पहले एक छोटी बस्ती के रूप में हुई और कालांतर में विकसित होकर आज के स्वरूप में है । यह शहर 1960 तक मध्य भारत राज्य की राजधानी था। 1960 के बाद यहां की मराठी आबादी को देखते हुए इसे महाराष्ट्र के जिले के रूप में शामिल कर लिया गया। फिर राजा भोंसले के उपरान्त यह मराठा साम्राज्य में शामिल हो गया। 19वीं सदी में अंग्रेज़ी हुकूमत ने उसे मध्य प्रान्त व बेरार की राजधानी बना दिया। आज़ादी के बाद राज्य पुनर्रचना ने नागपुर को महाराष्ट्र की उपराजधानी बना दिया। बाबा साहेब डॉ. भीमराव अंबेडकर की यह दीक्षा भूमि भी है। नागपुर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ एवं विश्व हिंदू परिषद जैसे राष्ट्रवादी संघटनों का एक प्रमुख केंद्र है। नागपुर का कुल क्षेत्रफल 9897 वर्ग किलोमीटर है नागपुर जिले में कुल 14 तहसीलें (नागपुर (शहरी), नागपुर (ग्रामीण), सावनेर, कामठी, रामटेक, उमरेड, हिंगना, पारसेओनी, मौदा, कुही, भिवापुर, कटोल, नरखेड़ और कलमेश्वर) हैं और यह महाराष्ट्र राज्य का एक जिला है। सभी तहसीलों के अंतर्गत कुल 1872 गाँव नागपुर जिले में हैं।

नागपुर की स्थापना संबंधी तथ्य :

- **गोंड राजा द्वारा नींव (18वीं शताब्दी):** 18वीं शताब्दी के प्रारंभ में, देवगढ़ के गोंड शासक बख्त बुलंद शाह ने नाग नदी के किनारे 12 छोटी बस्तियों को मिलाकर नागपुर शहर की स्थापना की। उन्होंने इस स्थान को दिल्ली की तर्ज पर विकसित किया और इसे एक

सभ्य शहर बनाने का निर्णय लिया।

- **स्थापना का कारण:** पहले इस क्षेत्र को फणींद्रपुर भी कहा जाता था, क्योंकि यहाँ नागों की अधिकता थी और नागफणी के जंगल थे, जिसके कारण इसका नाम नागपुर पड़ा।
- **भोसले शासकों का शासन :** 1739 में, चंद सुल्तान की मृत्यु के बाद, सत्ता संघर्ष शुरू हुआ और रघुजी भोंसले ने नगर पर अपना नियंत्रण कर लिया। भोंसले शासन के दौरान, नागपुर एक महत्वपूर्ण प्रशासनिक केंद्र के रूप में विकसित हुआ और उन्होंने संतरों की खेती को भी प्रोत्साहित किया, जिससे यह क्षेत्र ''संतरे का शहर'' कहलाया।
- **ब्रिटिश शासन :** 1817 में सीतावर्डी की लड़ाई के बाद, भोंसले शासकों का प्रभाव कम हो गया। 1853 में, अंतिम भोंसले राजा के बिना उत्तराधिकारी के मृत्यु के बाद, अंग्रेजों ने डॉक्ट्रिन ऑफ लैप्स के तहत नागपुर को ब्रिटिश शासन में शामिल कर लिया।
- **औद्योगिक और राजनीतिक महत्व:** 1861 में नागपुर को सेंट्रल प्रोविंस की राजधानी बनाया गया और 1867 में रेलवे के जुड़ने से यह एक प्रमुख व्यापारिक केंद्र बन गया। 1877 में यहां देश की पहली कपड़ा मिल एम्प्रेस मिल्स स्थापित हुई।
- **आधुनिक इतिहास:** स्वतंत्रता के बाद, नागपुर पहले मध्य प्रदेश की राजधानी थी और 1960 में महाराष्ट्र राज्य बनने के बाद यह इसकी उपराजधानी (शीतकालीन) बनी।

नाम : नागपुर का नाम नाग नदी से रखा गया है। यह नदी नागपुर के पुराने हिस्से से गुजरती है। नागपुर महानगर पालिका के चिन्ह पर नदी और एक नाग है। नागपुर संतरों के लिये मशहूर है और उसे संतरा नगरी भी कहा जाता है। नागपुर में नाग सांप बहुत पाए जाते थे इस कारण से नागपुर का नाम 'नागपुर' रखा गया।

पर्यटन स्थल

अंबाझरी झील : शहर के पश्चिमी हिस्से में स्थित यह झील 15.4 वर्ग किलोमीटर के क्षेत्र में फैली हुई है। चारों ओर से खूबसूरत बगीचों से घिरी इस झील में नौकायन का आनंद लिया जा सकता है। झील के संगीतमय फव्वारे इस झील की सुंदरता में चार चांद लगा देते हैं। झील के साथ ही एक बेहद खूबसूरत बगीचा है जिसे नागपुर के सबसे सुंदर स्थलों में शामिल किया जाता है।

बालाजी मंदिर : सेमीनरी पहाड़ियों के सुरम्य वातावरण में भगवान वेंकटेश बालाजी का यह मंदिर बना हुआ है। मंदिर की अद्भुत वास्तुकारी देखने और आध्यात्मिक वातावरण की चाह में उत्तर और दक्षिण भारत से हजारों की तादाद में श्रद्धालुओं का यहां आगमन होता है। मंदिर परिसर में भगवान कार्तिकेय की प्रतिमा भी स्थापित है, जिसे देवताओं की सेना का सेनापति कहा जाता है।

पोद्दारेश्वर राम मंदिर : इस मंदिर का निर्माण राजस्थान के पोद्दार परिवार के श्री

जमुनाधर पोद्दार ने 1923 ई. में करवाया था। मंदिर में भगवान राम और शिव की प्रतिमाएं स्थापित हैं। सफेद संगमरमर और लाल बलुआ पत्थर से बने इस मंदिर में खूबसूरत नक्काशी की गई है। राम नवमी को होने वाली राम जन्मोत्सव शोभायात्रा के दौरान यहां बड़ी संख्या में श्रद्धालु एकत्रित होते हैं।

बालासाहेब गोरेवाडा प्राणी संग्रहालय : यह प्राणी संग्रहालय नागपुर में स्थित है। यह अपनी सफारी के लिए प्रसिद्ध है, जहां बाघ, तेंदुए, भालू और विभिन्न शाकाहारी जानवर खुले बाड़ों में देखे जा सकते हैं। मुख्य जानवरों में बाघ (राजकुमार और ली), तेंदुए, सुस्त भालू, चीतल, नीलगाय, और संगाई (दुर्लभ हिरण) शामिल हैं।

स्वामी नारायण मंदिर - नागपुर शहर के पूर्व में यह स्वामी नारायण भगवान का मंदिर है। यह मंदिर अत्यंत सुंदर तरीके से आधुनिक वास्तुशिल्प का परिचायक है।

दीक्षाभूमि : पश्चिमी नागपुर में रामदास पेठ के निकट दीक्षाभूमि स्थित है। भारतरत्न डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर जी ने इसी जगह 1956 में अपने लाखों अनुयायियों के समक्ष बौद्ध धम्म की दीक्षा ली थी। हर साल बौद्ध धम्म के अनुयायी लाखों की संख्या में आकर भेंट देते हैं। इसी कारण यह स्थान तीर्थस्थल के तौर पर जाना जाता है। इस स्थान पर एक मेमोरियल भी बना हुआ है। सांची के स्तूप जैसी एक शानदार इमारत का यहां निर्माण किया गया है जिसे बनवाने में उस समय 6 करोड़ रुपये खर्च हुए थे। इस इमारत के प्रत्येक खंड में एक साथ 5000 भिक्षु ठहर सकते हैं।

अदासा : यह नागपुर का एक छोटा-सा गांव है। यहां अनेक प्राचीन और शानदार मंदिर देखे जा सकते हैं। यहां के गणपति मंदिर में भगवान गणेश की एकल शिलाखंड से बनी प्रतिमा स्थापित है। अदासा के समीप ही एक पहाड़ी में तीन लिंगों वाला भगवान शिव को समर्पित मंदिर बना हुआ है। माना जाता है कि इस मंदिर के लिंग अपने आप भूमि से निकले थे।

रामटेक : रामटेक नामक तीर्थ स्थल नागपुर से करीब 50 कि. मी. दूरी पर स्थित है। इस स्थान को रामटेक इसलिए कहा जाता है क्योंकि यहां भगवान राम और उनकी पत्नी सीता के पवित्र चरणों का स्पर्श हुआ था। यहां की पहाड़ी के शिखर पर भगवान राम का मंदिर बना हुआ है, जो लगभग 600 साल पुराना माना जाता है। रामनवमी पर्व यहां बड़े धूमधाम से मनाया जाता है। संस्कृत के कवि कालिदास के मेघदूतम् में इस स्थान को रामगिरी कहा गया है। इसी स्थान पर उन्होंने मेघदूतम् की रचना की थी। पहाड़ी पर कालिदास को समर्पित एक स्मारक भी बना हुआ है। रामटेक पहाड़ी के उत्तर में निचले कर्पुर बावली नामक स्थान है जहा करीब 1200 साल पुराना जीर्ण मंदिर है । खिंडसी नामक बड़ा तालाब भी रामटेक के पूर्व में स्थित है ।

मरकड : वेनगंगा नदी के बांए तट पर स्थित मरकड एक धार्मिक स्थल के रूप में लोकप्रिय है। संत मार्कडेंय के नाम पर इस जगह का नाम पड़ा। यहां लगभग 24 मंदिरों

का समूह है। माना जाता है कि यहां के शिवलिंग की मार्कडेंय ने पूजा की थी। यहां के मंदिरों की वास्तुकारी खजुराहो के मंदिरों से मिलती है।

नगरधन : नगरधन एक महत्वपूर्ण प्रागैतिहासिक नगर है। इस नगरधन को प्राचीन नन्दिवर्धन होने की बात कही जाती है। शैल साम्राज्य के राजा नंदवर्धन को इस नगर का मूल संस्थापक माना जाता है। नगरधन में भोंसलों द्वारा स्थापित एक किला है जिसकी दीवारें ईंटों से बनी हुई हैं। यहां एक वन्यजीव अभयारण्य भी है। यहां जंगली जानवरों को खुले में विचरण करते देखा जा सकता है। गौर यहां का मुख्य आकर्षण है। साथ ही सांभर, हिरन और अन्य बहुत से जीवों को देखा जा सकता है।

नवेगांव बांध : नवेगांव बांध को विदर्भ के सबसे लोकप्रिय फॉरेस्ट रिजॉर्ट में शुमार किया जाता है। यहां साहसिक खेलों के अनेक अवसर उपलब्ध हैं। इस बांध को 18 वीं शताब्दी की शुरूआत में कोलू पटेल कोहली ने बनवाया था। यहां की पहाड़ियों के बीच एक बेहद खूबसूरत झील भी बनी हुई है। नवेगांव बांध के वाचटॉवर से यहां के वन्यजीवों की गतिविधियां देखी जा सकती हैं। यहां एक डीयर पार्क भी बना हुआ है।

सेवाग्राम : महात्मा गांधी ने 1933 में सेवाग्राम आश्रम स्थापित किया था। यहां उन्होंने अपने जीवन के 15 वर्ष व्यतीत किए थे। कहा जाता है कि इस स्थान पर महात्मा गांधी समाज सेवा के विविध कार्यक्रम संपन्न करते थे। इसी कारण इसे सेवाग्राम कहा जाता है। यहां के यात्री निवास में लोगों के ठहरने की व्यवस्था है।

सीताबर्डी किला : नागपुर के केंद्र में दो पहाड़ियों (बड़ी और छोटी टेकरी) पर स्थित एक ऐतिहासिक किला है, जिसका निर्माण 1702 में गोंड राजा बख्त बुलंद शाह ने करवाया था। 1817 में अंग्रेजों ने इस पर कब्जा कर लिया और इसे सुदृढ़ बनाया। यह 1817 के प्रसिद्ध सीताबुल्डी के युद्ध का मुख्य स्थल है, जो मराठाओं और ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के बीच हुआ था। यह किला मराठा (अप्पा साहेब) और अंग्रेजों के बीच संघर्ष का गवाह रहा है, जिसके बाद इसे अंग्रेजों के नियंत्रण में ले लिया गया और अधिक किलेबंदी की गई। नागपुर का ऐतिहासिक सीताबर्डी किला भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का गवाह रहा है, और इसमें महात्मा गांधी की कैद से जुड़ी यादें शामिल हैं। 10 अप्रैल से 15 मई 1923 के मध्य गांधीजी को इस किले में नज़रबंद किया गया था, जिसके बाद यहां एक सेल को उनके नाम पर संरक्षित किया गया है। यह किला अब भारतीय सेना के नियंत्रण में है और कुछ विशेष दिनों पर जनता के लिए खोला जाता है।

शिक्षा और वाणिज्य

नागपुर में लगभग 10 से भी अधिक अभियांत्रिकी (इंजीनियरिंग) महाविद्यालय, 6 शासकीय और 13 गैर शासकीय चिकित्सा महाविद्यालय, 15 से अधिक प्रमुख होटल मैनेजमेंट संस्थान और महाविद्यालय हैं। इसके अतिरिक्त कला, वाणिज्य, विज्ञान, प्रबंधन एवं

विधि के क्षेत्र में भी यहाँ उत्कृष्ट शिक्षा संस्थान हैं। उक्त के अलावा राष्ट्रीय अग्नि सेवा महाविद्यालय, नागपुर भारत का एकमात्र सरकारी फायर इंजीनियरिंग कॉलेज है। यह गृह मंत्रालय के तहत आता है और 1978 से बी.ई. (फायर इंजीनियरिंग) कोर्स संचालित कर रहा है। यह महाविद्यालय अग्नि शमन सेवा से जुड़े अधिकारियों/कर्मचारियों को सेवाकालीन प्रशिक्षण भी प्रदान करता है। नागपुर की शिक्षा के साथ-साथ व्यापार जगत में भी विशिष्ट पहचान है।

आवागमन

वायु मार्ग : डॉ. बाबासाहेब अंबेडकर अंतर्राष्ट्रीय विमान क्षेत्र जिसे सोनेगाँव एयरपोर्ट भी कहते हैं, यहां का एयरपोर्ट है जो सिटी सेंटर से 6 किलोमीटर की दूरी पर है। इस घरेलू एयरपोर्ट से देश के कई शहरों के लिए उड़ानें उपलब्ध हैं।

रेल मार्ग : नागपुर जंक्शन रेलवे स्टेशन राज्य का एक प्रमुख रेलवे जंक्शन है। यहाँ से मुंबई, दिल्ली, कोलकाता, चेन्नई, कोल्हापुर, पुणे, अहमदाबाद, हैदराबाद, वाराणसी, गोरखपुर, भुवनेश्वर, त्रिवेन्द्रम, कोचीन, बंगलुरू, मंगलौर, पटना, इंदौर और आदि शहरों के लिए सीधी ट्रेनें हैं। यह मध्य रेल की एक बहुत बड़ी और व्यस्त रेल प्रणाली है।

सड़क मार्ग : राष्ट्रीय राजमार्ग 44, राष्ट्रीय राजमार्ग 47, और राष्ट्रीय राजमार्ग 53 नागपुर को देश के प्रमुख शहरों से जोड़ता है। देश के विभिन्न छोटे-बड़े शहरों से यहां सड़क मार्ग द्वारा पहुंचा जा सकता है। बालासाहेब ठाकरे महाराष्ट्र समृद्धि (701 किमी) नागपुर को मुंबई से जोड़ने वाला 6-लेन (8-लेन तक विस्तार योग्य) ग्रीनफील्ड एक्सप्रेसवे है, जो 5 जून 2025 से पूरी तरह कार्यात्मक है। अब नागपुर और मुंबई के बीच यात्रा का समय 16-18 घंटे से घटकर केवल 7-8 घंटे हो गया है। यह एक्सप्रेसवे नागपुर से शुरू होकर वर्धा, अमरावती, वाशिम, बुलढाणा, जालना, औरंगाबाद, नासिक और ठाणे जिलों से होकर गुजरता है। यह दिल्ली-मुंबई एक्सप्रेसवे, जवाहरलाल नेहरू पोर्ट ट्रस्ट, और नागपुर मेट्रो जैसे प्रमुख बुनियादी ढांचे से जुड़ता है। नागपुर में सिटी बस की सेवा भी उपलब्ध है जो लोगों को शहर में एक जगह से दूसरी जगह तक ले जाता है।

विशेष : नागपुर भौगोलिक रूप से दक्कन के पठार के अंतर्गत आता है और यह भारत का भौगोलिक केंद्र बिंदु भी है। इसके आसपास का क्षेत्र एक लहरदार पठार है, जो उत्तर की ओर सतपुड़ा पर्वतमाला तक फैला हुआ है। महाराष्ट्र में स्थित नागपुर जिला आम और खास दोनों ही परिस्थितियों में महत्वपूर्ण है। यहाँ का मौसम सभी ऋतुओं में औसत और सामान्य के बीच रहता है। नागपुर के मौजूदा संसाधन और दिन-प्रतिदिन उत्पन्न हो रहे अवसर विद्यार्थियों, सैलानियों, व्यापारियों, शिक्षित युवाओं, मजदूरों आदि की अपने-अपने क्षेत्र में तलाश को पूर्ण करने में सक्षम हैं। नागपुर सुविधा और सुरक्षा के दृष्टिकोण से समृद्ध है।

❑ ❑ ❑

दीक्षाभूमि

प्रियंका कुमारी
लेखापरीक्षक

नागपुर, भारत के महाराष्ट्र राज्य का तीसरा सबसे बड़ा शहर है। यह महाराष्ट्र और भारत का एक प्रमुख नगर है और भारत के मध्य में स्थित है। नागपुर मुख्य रूप से अपने रसीले संतरों के लिए प्रसिद्ध है, जिसे अक्सर ''संतरा शहर'' कहा जाता है,

नागपुर के प्रमुख पर्यटक आकर्षण है- दीक्षाभूमि

महाराष्ट्र सरकार ने दीक्षाभूमि को ''ए'' क्लास के पर्यटन क्षेत्र का दर्जा दिया है। नागपुर शहर के सभी धार्मिक व पर्यटन क्षेत्रों में यह पहला स्थल है, जिसे ए क्लास का दर्जा हासिल हुआ है।

दीक्षाभूमि भारत में बौद्ध धर्म का एक प्रमुख केंद्र है। यहीं पर सैकड़ों दलित लोगों ने डॉ. बी. आर. अंबेडकर को अपना नेता मानते हुए बौद्ध धर्म को अपनाया था। यहां इस दिन को अशोक विजय दशमी के रूप में मनाया जाता है।

दीक्षाभूमि में हर साल हज़ारों श्रद्धालुओं और पर्यटकों का जमावड़ा लगा रहता है। यहां एक बौद्ध स्तूप है, जो 120 फुट लंबा है। इस पवित्र स्थान पर बोधिसत्त्व डॉ. भीमराव अंबेडकर जी ने 14 अक्टूबर 1956 को पहले महास्थविर चंद्रमणी से बौद्ध धम्म दीक्षा लेकर अपने 5,00,000 से अधिक अनुयायिओं को बौद्ध धर्म की दीक्षा दी थी।

त्रिशरण, पंचशील और अपनी 22 प्रतिज्ञाएँ देकर डॉ. अंबेडकर ने हिन्दु दलितों का धर्मपरिवर्तन किया था। अगले दिन फिर 15 अक्टूबर को तीन लाख लोगों को बौद्ध धम्म की दीक्षा दी और स्वयं भी फिर से दीक्षित हुए।

विश्व के प्राचीनतम धर्मों में से एक बौद्ध धर्म है। बौद्ध धर्म के संस्थापक महात्मा बुद्ध थे।

दीक्षाभूमि की वास्तुकला सम्राट अशोक के समय में प्रचलित बौद्ध वास्तुकला शैली से प्रेरित है। यह स्तूप धौलपुर बलुआ पत्थर से बना है और इसकी ऊंचाई 120 फीट है। स्तूप के आधार का व्यास 350 फीट है। स्तूप दो स्तरों का है। पहले स्तर पर चार प्रवेश द्वार हैं, जिनमें से प्रत्येक को बुद्ध के जीवन के दृश्यों को दर्शाने वाली जटिल नक्काशी से सजाया गया है। दूसरे स्तर पर एक गोलाकार मार्ग और एक छोटा कक्ष है जहाँ बुद्ध के अवशेष रखे गए हैं। स्तूप एक विशाल प्रांगण से घिरा हुआ है, जिसमें कई छोटे स्तूप और बुद्ध की मूर्तियाँ हैं। इस प्रांगण का उपयोग धार्मिक समारोहों और सभाओं के लिए भी किया जाता है। दीक्षाभूमि का निर्माण 20वीं शताब्दी में हुआ था और इसे भारत में दलित बौद्ध आंदोलन का प्रतीक माना जाता है। इस आंदोलन का उद्देश्य दलितों के बीच बौद्ध धर्म को पुनर्जीवित करना है, जिन्हें ऐतिहासिक रूप से इस धर्म से वंचित रखा गया था। इस स्मारक को वास्तुकार शेओ दान माल ने डिजाइन किया था और यह 2001 में बनकर तैयार हुआ था। इसे आधुनिक बौद्ध वास्तुकला की उत्कृष्ट कृति माना जाता है।

'दीक्षा' संस्कृत शब्द है जिसका अर्थ है दीक्षा संस्कार जबकि भूमि का अर्थ है ज़मीन।

आधुनिक भारत के निर्माताओं में से एक डॉ. बी.आर. अंबेडकर और उनकी पत्नी श्रीमती सविता अंबेडकर जी ने 14 अक्टूबर, 1956 को विजयदशमी के दिन एक गंभीर और भावपूर्ण समारोह में औपचारिक रूप से बौद्ध धर्म को अपनाया था। इस घटना को धर्म चक्र प्रवर्तन दिवस के रूप में मनाया जाता है और इस ऐतिहासिक समारोह की अध्यक्षता उस समय भारत के सबसे वरिष्ठ भिक्षु, महास्थवीर भंते चंद्रमणि ने की थी, जो मूल रूप से बर्मा के थे।

दीक्षाभूमि भारत में बौद्ध पर्यटन का एक महत्वपूर्ण स्थल है और हर साल हजारों पर्यटकों को आकर्षित करता है। यह स्थल कई सांस्कृतिक और धार्मिक कार्यक्रमों का भी आयोजन करता है, जिनमें वार्षिक धम्म चक्र प्रवर्तन दिवस भी शामिल है, जो उस दिन की याद में मनाया जाता है जब बुद्ध ने अपना पहला उपदेश दिया था।

डॉ. बी.आर. अंबेडकर के निधन दिवस 6 दिसंबर, 1956 को महापरिनिर्वाण दिवस के रूप में मनाया जाता है।

18 दिसंबर 2001 को तत्कालीन भारत के राष्ट्रपति श्री के. आर. नारायणन द्वारा नागपुर के दीक्षाभूमि में चार अलंकृत तोरणों वाले एक विशाल, दो मंजिला स्तूप का उद्घाटन किया गया था। यह स्तूप यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल सांची के भव्य स्तूप की याद दिलाता है, लेकिन आधुनिक वास्तुकला का नमूना है।

दीक्षाभूमि का विशाल और हरा-भरा परिसर तीर्थयात्रियों और पर्यटकों दोनों को आनंदित करता है और यहाँ एक पवित्र बोधि वृक्ष और एक बौद्ध विहार भी स्थित है।

❑ ❑ ❑

मेरा नागपुर : एक शांत शक्ति का केंद्र

श्रीमती बेबिनंदा आर. ठाकुर
लेखापरीक्षक

हमारा यह शहर नागपुर भारत के ठीक बीचों-बीच स्थित है, न सिर्फ नक्शे में, बल्कि अपने अर्थ और प्रभाव में भी। यहाँ स्थित जीरो माइल स्टोन केवल दूरी नापने का बिंदु नहीं है, बल्कि यह इस विचार का प्रतीक है कि भारत की धड़कन कभी शोर नहीं करती, बस लगातार चलती रहती है। इतिहास के पन्नों को पलटें तो नागपुर केवल एक शहर नहीं था, बल्कि एक प्रशासनिक केंद्र था। ब्रिटिश काल में यह संट्रल प्रोविंसेज की राजधानी रहा और स्वतंत्र भारत में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का मुख्यालय यहीं स्थापित हुआ।

इस शहर ने विचारों को जन्म दिया और नेतृत्व को आकार दिया, लेकिन कभी अपनी महत्ता का प्रदर्शन नहीं किया।

आज के समय में नागपुर को अक्सर लोग सिर्फ ''ऑरेंज सिटी'' के नाम से जानते

है, पर यह पहचान इस शहर के व्यक्तित्व का केवल एक छोटा-सा हिस्सा है।

नागपुर महाराष्ट्र की शीतकालीन राजधानी हैं जहाँ राज्य की राजनीति, प्रशासन और नीतियाँ हर सर्दी में आकार लेती हैं। साथ ही एम्स, आय आय एम और अन्य उच्च शिक्षण संस्थानों के कारण नागपुर धीरे-धीरे एक शिक्षा के केंद्र के रूप में उभर रहा है। हाल ही में मेट्रो सिटी का दर्जा पाकर यह शहर आधुनिकता की ओर बढ़ा है, लेकिन अपनी मूल शांति को छोड़े बिना।

नागपुर की आत्मा उसके धार्मिक और सांस्कृतिक स्थलों में भी बसती है। ताजबाग, दीक्षाभूमि, कोराड़ी मंदिर, स्वामीनारायण मंदिर, भवानी देवी मंदिर पारडी, ये केवल आस्था के स्थल नही, बल्कि सह-अस्तित्व के प्रतीक है। नागपुर एक औद्योगिक क्षेत्र के रूप में सामने आ रहा है। 'एम.आई.डी.सी.' एवं मिहान होने की वजह से नागपुर कई जरुरतमंद लोगों के लिए रोजगार का स्थल भी हैं। अन्य राज्य के लोग इस शहर में काम की खोज में आते है और यहीं बस जाते है। बिजली उत्पादन में नागपुर के कोराडी एवं खापरखेड़ा का एक बड़ा योगदान है।

इस शहर का महत्व न्यायिक व्यवस्था में भी दिखाई देता है; यहाँ बॉम्बे उच्च न्यायालय की नागपुर पीठ स्थित है। इसके साथ ही अनेक न्यायालय, सरकारी कार्यालय एवं प्रशासनिक संस्थान यहाँ स्थित हैं। यहाँ का बाजार मध्य भारत के सबसे बड़े थोक व्यापार केंद्रों में से एक है। खास तौर से संतरा, ढोले, अनाज आदि की लेन-देन यहाँ बड़े पैमाने पर होती है।

नागपुर की जिंदगी उसकी आवाजाही और रोजमर्रा की हलचल में झलकती है। राम झूला शहर के एक हिस्से को दूसरे से जोड़ता है और हर दिन अनगिनत लोगों की दिनचर्या का हिस्सा बनता है। यहाँ से गुजरते हुए कोई विशेष भव्यता नहीं दिखती, लेकिन यही सादगी नागपुर की पहचान है। पास ही में नागपुर रेलवे स्टेशन दिखाई पड़ता है जहाँ के डायमंड क्रॉसिंग पर उत्तर-दक्षिण और पूर्व-पश्चिम रेलवे लाइनें एक दूसरे को काटती है। इस कारण नागपुर देश के चारों छोरो को जोड़े रखता है।

स्टेशन के पास ही टेकडी मंदिर हैं जो की एक छोटी पहाड़ी पर स्थित है, जहाँ जाते ही वातावरण शांत लगने लगता हैं। लोग यहाँ पूजा करने के साथ-साथ मन को शांत करने भी आते हैं। टेकडी का मंदिर यह दर्शाता है कि नागपुर में आस्था और सुकून दोनों साथ में चलते हैं। यहाँ हर धर्म हर पंथ के लोग शांति और सम्मान के साथ रहते आए हैं और दूर-दूर से श्रद्धालु इस शहर में सुकून खोजने आते हैं।

नागपुर की सबसे सुंदर बात शायद यह है कि यहाँ की भाषा कभी दीवार नही बनती। आप हिंदी बोलें या मराठी कोई किसी के साथ भेदभाव नही करता। यहाँ अजनबी भी सुरक्षित महसूस करता है।

नागपुरकर दिखावे में नहीं बल्कि शांत, संयमी और जमीन से जुड़े स्वभाव में विश्वास रखते है।

नागपुर एक चमकदार महानगर नहीं, लेकिन यह एक स्थिर, संतुलित और भरोसेमंद शहर हैं। शायद यही वजह है कि यह अक्सर कम आँका जाता है, पर जो इसे समझता है, वह इसकी वास्तविक शक्ति को पहचानता है।

❑ ❑ ❑

कार्यालय के विशेष कार्यक्रम

भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक श्री के. संजय मूर्ति द्वारा कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II), महाराष्ट्र, नागपुर के दौरे की कुछ झलकियां।

ऑडिट सप्ताह के दौरान आयोजित कुछ कार्यक्रमों की झलकियां।

पश्चिम क्षेत्रीय फुटबाल टूर्नामेंट : 2025-26

कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II), महाराष्ट्र, नागपुर की मेजबानी में भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग के पश्चिम क्षेत्रीय फुटबॉल टूर्नामेंट का सफल आयोजन दिनांक 09.02.2026 से 13.02.2026 तक किया गया। फाइनल में महालेखाकार, नागपुर की टीम ने महालेखाकार, राजस्थान की टीम को हरा कर विजेता का खिताब अपने नाम किया। भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग पश्चिम क्षेत्रीय के फुटबॉल टूर्नामेंट की कुछ झलकियां।

नागपुर के कुछ प्रमुख मंदिर

श्रीमती रिंकू सिन्हा
स.ले.प.अ.

यूँ तो नागपुर मंदिरों का शहर है, एक से बढ़कर एक कई मंदिर हैं यहाँ जो दर्शाता है कि लोगों में अपने सनातन हिन्दु धर्म के प्रति आस्था कितनी जबरदस्त है। पर बीस-बाइस वर्षों से मैंने जिन मंदिरों में सबसे अधिक दर्शन करने का सौभाग्य पाया है, उनमें से कुछ प्रमुख एवं अत्यंत प्रसिद्ध मंदिर ये तीन हैं जिनका मैं यहाँ वर्णन करना चाहूँगी -

1. गणेश टेकडी मंदिर, सीताबर्डी
2. माँ जगदम्बा महालक्ष्मी मंदिर एवं
3. तेलनखेड़ी हनुमान मंदिर

गणेश टेकडी मंदिर

नागपुर के अत्यंत प्रसिद्ध एवं प्राचीन मंदिरों में से यह एक हैं जो नागपुर शहर के मुख्य रेलवे स्टेशन से बेहद करीब है। ऐसी मान्यता है कि यह मंदिर लगभग 250 वर्ष पुराना है एवं मंदिर में जो प्रतिमा है वह स्थयु

गणेश जी की प्रतिमा है अर्थात यह कहीं से लाकर यहाँ स्थापित नहीं की गई है बल्कि यहीं पर इनका अवतरण हुआ है। इसलिए इस मंदिर को जागृत देवस्थानों में से एक माना जाता है। यहाँ प्रतिदिन कम से कम 5000 भक्त दर्शन करने आते हैं। संकष्टी चतुर्थी एवं एकादशी, को तो मंदिर में विशेष सजावट होती है एवं उन दिनों बप्पा के दर्शन करने वाले भक्तों की संख्या 10000 तक हो जाती है। माघ मास की चतुर्थी जिसे तिल चतुर्थी के नाम से जाना जाता है उस दिन तो मंदिर में भक्तों का मेला लग जाता है तथा आयोजन समिति की ओर से उस दिन भीड़ नियंत्रित करने के लिए तथा सभी को बप्पा के दर्शन मिल सकें इसके लिए विशेष इंतजाम किये जाते हैं।

एक पहाड़ी पर स्थित होने के कारण इस मंदिर का नाम गणेश टेकडी मंदिर है, क्योंकि पहाड़ी को मराठी भाषा में 'टेकड़ी' कहा जाता है। मंदिर के वर्तमान रूप का श्रेय स्वर्गीय श्री गणपतिराव जोशी एवं इसके पूर्व 1970 तत्कालीन रक्षामंत्री स्वर्गीय श्री यशवन्तराव चौहान को मंदिर के जीर्णोद्वार का श्रेय जाता हैं क्योंकि उसके पहले यह एक बेहद छोटा सा मंदिर हुआ करता था।

मंदिर में रोज तीन समय आरती होती

है। पहली आरती का समय सुबह 6.30 बजे, दूसरी आरती का समय दोपहर 12.30 बजे एवं संध्या आरती का समय शाम 5.30 बजे है। इन तीनों आरती के बाद भक्तों में प्रसाद का वितरण भी प्रतिदिन किया जाता है। इस मंदिर में नई वाहनों की पूजा के लिए भी विशिष्ट सेवा उपलब्ध है। काउंटर पर दो पहिया वाहन एवं चार पहिया वाहन के लिए अलग-अलग निर्धारित शुल्क जमा करके रसीद प्राप्त किया जा सकता है एवं उन रसीदों को दिखाकर मंदिर के पंडित जी द्वार फूल-माला-नारियल एवं प्रसाद के साथ वाहनों की पूजा कराई जा सकती है। इस कुशल इंतजाम के कारण ही रोज मंदिर में बड़ी संख्या में लोग अपने नए वाहनों की पूजा के लिए भी आते रहते हैं। मंदिर के प्रांगण में ही गणेश जी की प्रतिमा के साथ-साथ शिव पार्वती, विष्णु-लक्ष्मी आदि अन्य देवी-देवताओं के भी दर्शन किए जा सकते है। मुख्य मंदिर से सटा ही एक लक्ष्मी जी का भी मंदिर है जो अत्यंत सुंदर एवं शांतिदायक है। गणेश टेकडी मंदिर की प्रसिद्धि एवं इसके नागपुर शहर के बीचोबीच स्थित होने की वजह से नागपुर आने वाला हर धार्मिक व्यक्ति इस मंदिर के दर्शन जरुर करता है।

श्री महालक्ष्मी जगदम्बा मंदिर, कोराडी

नागपुर शहर से 15 किमी दूर कोराड़ी में माँ महालक्ष्मी जगदम्बा का भव्य मंदिर स्थित है जिसे कोराडी मंदिर के नाम से भी जाना जाता है। करीब 300 साल पूराने इस मंदिर में माँ जगदम्बा की स्वयंभू प्रतिमा स्थित है। यह

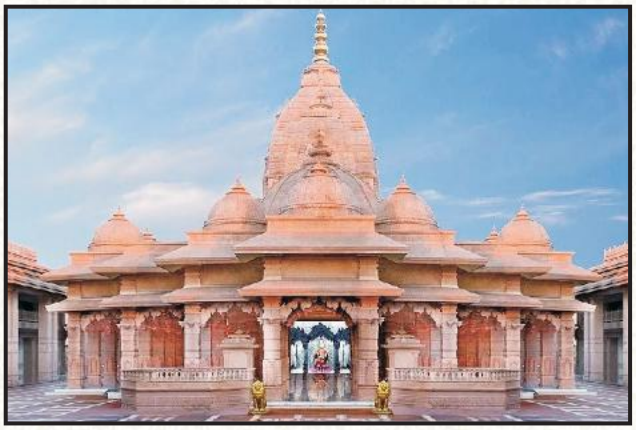

मंदिर करीब डेढ़ सौ एकड़ में फैला हुआ है, इसकी विशेषता यह है कि माता का दरबार चाँदी से बनाया गया है। इस मंदिर की खास बात यह है कि यहाँ माता का स्वरुप हर प्रहर में बदलता रहता है। यह प्रतिमा सुबह बालिका स्वरूप में, दोपहर में युवा स्वरूप में एवं रात में प्रौढ़ स्वरूप में दिखाई देती है। यूँ तो साल भर यहाँ भक्तों का ताता लगा रहता है पर नवरात्र के दिन में तो बात ही कुछ और होती है, माता के दर्शन के लिए सुबह से ही लोग लम्बी-लम्बी कतारों में लगे रहते हैं। माँ जगदम्बा के दरबार में एक ज्योत है जो 24 घंटे एवं 365 दिन प्रज्जवलित रहता है। मंदिर परिसर में अनेकों दुकानें सजी रहती है जिनमें तरह-तरह की फूल मालाएं एवं माता को चुनरी एवं अन्य प्रसाद सामग्री भक्तों को आकर्षित करती है। मंदिर प्रांगण में ही शिवजी का भी मंदिर स्थित है।

चार वर्ष पूर्व इस मंदिर को भव्य रुप देकर इसका जीर्णोद्धार किया गया है। राजस्थान के धौलपुर से लाए गये पत्थरों से इस मंदिर का पुननिर्माण किया गया है। महाराष्ट्र सरकार के पर्यटन विभाग ने इसे पर्यटन स्थल की सूची में शामिल किया है।

कोराड़ी स्थित यह मंदिर विदर्भ के 'शक्तिपीठ' के नाम से भी विख्यात है। मंदिर के प्रांगण में स्थित 'राम मंदिर' संग्रहालय भी पर्यटकों के आकर्षण का एक प्रमुख केन्द्र है। यहाँ संप्रति रामायणा को चित्र स्वरूप में दर्शाया गया है जो अत्यंत मनोहारी है।

तेलनखेड़ी हनुमान मंदिर

नागपुर स्थित तेलनखेड़ी हनुमान मंदिर भी नागपुर के प्रसिद्ध आध्यात्मिक मंदिरों में से एक है जो तेलनखेड़ी, फुटाला लेक के किनारे पहाड़ी पर स्थित है। इसे संकटमोचन बड़े हनुमान मंदिर के नाम से भी जाना जाता है। ऐसी मान्यता है कि इस मंदिर का निर्माण 12 वीं शताब्दी में वाकारक राज के दौरान करवाया गया था। यह मंदिर नागपुर के प्राचीनतम हनुमान मंदिरों में से एक है। मंदिर में यूँ तो रोज ही दर्शन के लिए भक्तों का आना जाना लगा रहता है पर मंगलवार एवं शनिवार की बात ही कुछ और है। ये दोनों ही दिन हनुमान जी की पूजा के लिए विशेष माने जाते हैं इसलिए इस दिन भीड़ भी कुछ ज्यादा ही होती है। मंदिर में प्रवेश करने के लिए ऊँची सीढ़ियाँ चढ़नी पड़ती है। ऊपर हनुमान जी के प्रमुख मंदिर के अलावा अन्य देवी-देवताओं के भी मंदिर है जैसे कि गणपति, दुर्गामाता, सरस्वती माता, गायत्री माता इत्यादि। मंदिर परिसर के पीछे एक कम्युनिटी हॉल भी स्थित है। उसके पीछे विष्णु भगवान का मंदिर है एवं ऊपर नवग्रह एवं अन्य देवी-देवताओं एवं प्रमुख गुरुओं जैस गजानन महाराज, साई बाबा आदि की भी प्रतिमाएँ स्थित है। बड़े-बड़े पेड़-पौधा से सुशोभित इस मंदिर के पीछे का हिस्सा बेहद रमणीय एवं आध्यात्मिक वातावरण का निर्माण करता है। सच्चे मन से जो इस मंदिर में हनुमान जी का पूजन करते हैं उनके सभी संकट दूर हो जाते हैं।

❑❑❑

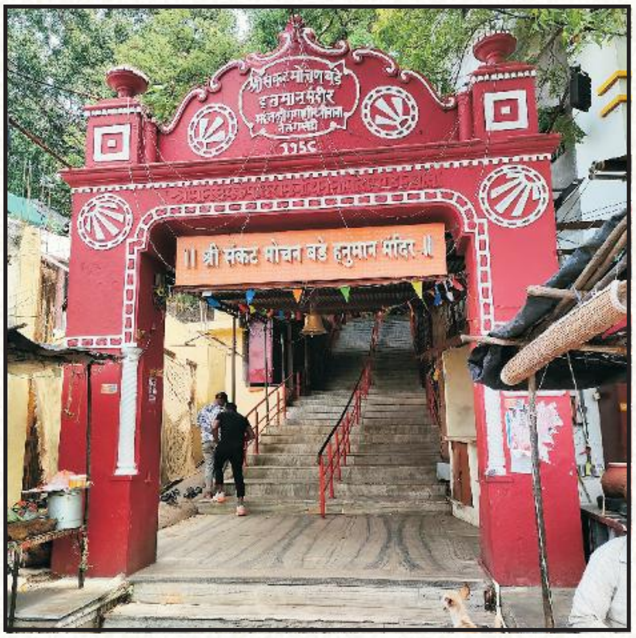

नागपुर की ऐतिहासिक यात्रा एवं समृद्ध सांस्कृतिक विरासत

डॉ. प्रियंका बी. गोस्वामी
सहायक निदेशक (राजभाषा)

भारत के मध्य में स्थित नागपुर एक ऐसा शहर है, जहाँ इतिहास और संस्कृति का अद्भुत संगम देखने को मिलता है। ''ऑरेंज सिटी'' के नाम से प्रसिद्ध यह नगर न केवल भौगोलिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है, बल्कि ऐतिहासिक, सामाजिक और सांस्कृतिक रूप से भी अत्यंत समृद्ध रहा है। इसकी ऐतिहासिक यात्रा प्राचीन काल से आरंभ होकर आधुनिक भारत तक अनेक महत्वपूर्ण घटनाओं और परिवर्तनों की साक्षी रही है।

नागपुर का नाम 'नाग' नदी और नागवंश से संबंधित माना जाता है। प्राचीन काल में यह क्षेत्र विभिन्न जनजातीय शासकों के अधीन था, किंतु इसका वास्तविक विकास गोंड शासन के दौरान हुआ। 18वीं शताब्दी में देवगढ़ (छिंदवाड़ा) के शासक गोंडवंश के राजाबख्त बुलंद शाह ने नागपुर को बसाया और इसे अपनी राजधानी बनाया। गोंड शासन के दौरान यहाँ की लोकसंस्कृति, लोककला और पारंपरिक संगीत का विकास हुआ। प्रकृति से जुड़ी जीवनशैली, सरल सामाजिक व्यवस्था और सामुदायिक उत्सवों ने इस क्षेत्र की सांस्कृतिक नींव को मजबूत किया। आज भी स्थानीय रीति-रिवाजों और लोकनृत्यों में जनजातीय परंपराओं की झलक दिखाई देती है।

गोंड शासन के बाद 1743 में मराठा शासक रघुजी भोंसले प्रथम ने नागपुर पर अधिकार किया। इसके बाद यह भोंसले राजवंश की राजधानी बना और राजनीतिक तथा व्यापारिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण केंद्र के रूप में विकसित हुआ। मराठा शासन के दौरान प्रशासनिक व्यवस्था सुदृढ़ हुई और सांस्कृतिक गतिविधियों को भी प्रोत्साहन मिला।इस दौरान अनेक मंदिरों, किलों और भवनों का निर्माण हुआ, जिनसे धार्मिक और सांस्कृतिक गतिविधियों को प्रोत्साहन मिला। मराठी भाषा, साहित्य और परंपराओं का व्यापक प्रसार हुआ और नागपुर मराठा साम्राज्य का एक महत्वपूर्ण केंद्र बन गया। इससे सामाजिक जीवन अधिक संगठित और समृद्ध हुआ।

वर्ष 1853 में नागपुर ब्रिटिश शासन के अधीन आ गया और सेंट्रल प्रोविंसेज़ की राजधानी बना। अंग्रेज़ों ने यहाँ आधुनिक शिक्षा प्रणाली, रेलवे और प्रशासनिक ढांचे का विकास किया। रेल मार्गों के निर्माण के कारण यह मध्य भारत का एक प्रमुख परिवहन केंद्र बन गया। शैक्षणिक संस्थानों और न्यायिक व्यवस्थाओं की स्थापना हुई, जिससे आधुनिक नागपुर की नींव मजबूत हुई। पश्चिमी शिक्षा के प्रभाव से नए विचारों और आधुनिक चेतना का उदय हुआ। आधुनिक चेतना के सुदृढ़ होने से पत्रकारिता, नवीन साहित्य सृजन एवं सामाजिक सुधार आंदोलनों को अत्यधिक बल मिला।

नागपुर इसी काल में स्वतंत्रता संग्राम की गतिविधियों का भी केंद्र बना। भारतीय

राष्ट्रीय कांग्रेस का ऐतिहासिक अधिवेशन वर्ष 1920 में नागपुर में आयोजित हुआ, जिसमें असहयोग आंदोलन की रूपरेखा को स्वीकृति मिली। डॉ. भीमराव अंबेडकर ने 14 अक्टूबर 1956 को नागपुर की दीक्षाभूमि में लाखों अनुयायियों के साथ बौद्ध धर्म स्वीकार किया। यह घटना भारतीय इतिहास में एक महत्वपूर्ण मोड़ मानी जाती है। इस घटना ने नागपुर को राष्ट्रीय ही नहीं, बल्कि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी विशिष्ट पहचान दिलाई। आज भी दीक्षाभूमि श्रद्धा, समानता, सामाजिक समता और आध्यात्मिक जागरण का प्रतीक है।

स्वतंत्रता के बाद नागपुर ने औद्योगिक और शैक्षणिक क्षेत्र में तेजी से विकास किया। नागपुर अपने संतरे के पैदावार के लिए विश्वभर में प्रसिद्ध है, जिसने इसे 'ऑरेंज सिटी' की पहचान दिलाई है। शिक्षा के क्षेत्र में भी यह शहर अग्रणी रहा है, जहाँ स्थित राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज नागपुर विश्वविद्यालय उच्च शिक्षा का एक प्रमुख केंद्र है। इसके अतिरिक्त, शहर के मध्य स्थित ज़ीरो माइल स्टोन भारत के भौगोलिक केंद्र को दर्शाता है और इसकी विशेष पहचान को और भी सुदृढ़ करता है। हाल के वर्षों में नागपुर ने आधारभूत संरचना के क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति की है। मेट्रो रेल परियोजना, आधुनिक सड़क नेटवर्क और सूचना प्रौद्योगिकी पार्कों के विकास ने शहर को आधुनिक स्वरूप प्रदान किया है। राष्ट्रीय स्वंय सेवक संघ का मुख्यालय भी नागपुर में स्थित है, जिससे यह सामाजिक और वैचारिक दृष्टि से भी महत्वपूर्ण माना जाता है।

नागपुर की सांस्कृतिक विरासत भी अत्यंत समृद्ध और विविधतापूर्ण है। इस शहर की संस्कृति विभिन्न कालखंडों, शासकों और सामाजिक आंदोलनों के प्रभाव से निरंतर विकसित होती रही है। आधुनिक समय में नागपुर विभिन्न संस्कृतियों का संगम बन चुका है। यहाँ मराठी, हिंदी, गोंडी और अन्य भारतीय भाषाओं का सुंदर समन्वय देखने को मिलता है। गणेशोत्सव, दशहरा और दिवाली जैसे त्योहार यहाँ बड़े उत्साह और उल्लास से मनाए जाते हैं। 'मरबत उत्सव' नागपुर का विशिष्ट त्योहार है जिसमें पीले और काले रंग के पुतले (मरबत) बनाकर जुलूस निकाला जाता है। इसे सामाजिक बुराइयों को जलाने का प्रतीक माना जाता है। शहर में साहित्यिक गोष्ठियाँ, रंगमंच, संगीत समारोह और सांस्कृतिक उत्सव नियमित रूप से आयोजित होते हैं। शैक्षणिक संस्थानों और सांस्कृतिक संगठनों की सक्रियता ने नागपुर को एक जीवंत सांस्कृतिक केंद्र के रूप में स्थापित किया है। यह शहर अपनी ऐतिहासिक विरासत और आधुनिक चेतना के समन्वय के कारण आज भी सांस्कृतिक रूप से समृद्ध और प्रेरणादायक बना हुआ है।

इस प्रकार, नागपुर की ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक यात्रा अनेक शासनों, आंदोलनों और सांस्कृतिक परंपराओं से होकर गुजरी है। यह शहर केवल इमारतों और सड़कों का समूह नहीं, बल्कि गौरवशाली इतिहास और जीवंत संस्कृति की एक सशक्त गाथा है, जो आज भी अपनी परंपराओं और मूल्यों को संजोए हुए आधुनिकता की ओर निरंतर अग्रसर है।

❑❑❑

सीताबर्डी किला की सैर

श्री वैभव बहल
लेखापरीक्षक

हम गणतंत्र दिवस 2023 के अवसर पर अपने कार्यालय में ध्वजारोहण के पश्चात हमारे सहकर्मी सलीम खान के साथ सीताबर्डी किला की सैर करने के लिए निकल पड़े। सीताबर्डी किला शहर के सबसे महत्वपूर्ण ऐतिहासिक स्थलों में से एक है। यह किला दो पहाड़ियों, जिन्हें बड़ी टेकरी और छोटी टेकरी कहा जाता है, पर बना हुआ है। यह नागपूर रेलवे स्टेशन के पास में ही स्थित है।

किले के भीतर युद्ध स्मारक, पुरानी तोपें और शहर का शानदार नजारा देखने को मिलता है। इस किले में एक सेल है जहाँ गांधीजी 10 अप्रैल 1923 से 15 मई 1923 तक कैद रहे थे। यह किला सुरक्षा कारणों से आम जनता के लिए साल में केवल 26 जनवरी (गणतंत्र दिवस), 1 मई (महाराष्ट्र दिवस) तथा 15 अगस्त (स्वतंत्रता दिवस) को ही खुलता है। वर्तमान में यह स्थल भारतीय सेना की 118 वीं इन्फैंट्री बटालियन (प्रादेशिक सेना) के नियंत्रण में है।

किले के इतिहास के अनुसार, इसकी नींव 1702 में गोंड राजा बख्त बुलंद शाह ने रखी थी। हालांकि, वर्तमान किले का अधिकांश ढांचा अंग्रेजों द्वारा 1817-1822 के दौरान बनाया गया था। यह किला सीताबर्डी के युद्ध के लिए भी प्रसिद्ध है, जो नवंबर 1817 में मराठा शासक अप्पा साहेब भोंसले और ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी की सेनाओं के बीच में लड़ा गया था। इस ऐतिहासिक युद्ध के पश्चात् अंग्रेजों ने इस स्थान को एक मजबूत सैन्य किले में बदल दिया।

इस किले का भारतीय स्वतंत्रता संग्राम से भी संबंध है। सन 1857 के विद्रोह के दौरान, टीपू सुल्तान के पोते नवाब कादर अली और उनके साथियों को इसी किले की दीवारों पर फांसी दी गई थी। किले के भीतर उनकी याद में एक दरगाह बनी हुई है। इस किले का नाम शीतलाप्रसाद और बद्रीप्रसाद नामक दो भाइयों के नाम पर पड़ा, जो यहाँ शासन करते थे। एक अन्य मत के अनुसार, ऐसा माना जाता है कि सीताबर्डी यह नाम सीता (अनाज) और बुलडी (टीला) शब्दों से बना है क्योंकि यहाँ अनाज जमा किया जाता था।

अनुभव : अपने सहकर्मी के साथ सीताबर्डी किले में बिताए हुए पल बहुत ही उत्साहवर्धक और अविस्मरणीय थे जो मुझे जीवनभर याद रहेंगे।

❑ ❑ ❑

अपनापन

श्री अनुराग पाठक
स्टेनोग्राफर ग्रेड-II

मेरा जन्म उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ में हुआ था। मैं लखनऊ की गलियों में पला-बढ़ा अपने शहर से बइंतहा मोहब्बत करता था। चौक की तंग गलियों में टहलना, हजरतगंज की शामें, गोमती नदी के किनारे सुबह का आनंद लेने के बाद शर्मा की चाय का लुत्फ उठाना, यहीं मेरी दुनियाँ थी। टुंडे कबाबी के कबाब और बिरयानी मेरे दिल के उतने ही करीब थे जितने मेरे बचपन के दोस्त। लखनऊ सिर्फ मेरा शहर नहीं था, मेरी पहचान थी।

लेकिन जिंदगी हमेशा अपनी शर्तों पर चलती है। 25 साल की उम्र में मुझे नौकरी का एक अच्छा अवसर नागपुर में मिला। मेरी माँ, पिता और मेरे दोस्त मेरी इस उपलब्धि से जितने प्रसन्न थे मैं उतना ही निराश था। मैंने अपनी नौकरी की तैयारी के समय कभी नहीं सोचा था कि कोई दिन ऐसा भी आयेगा जब मुझे अपना भविष्य सवारने के लिये अपने परिवार और दोस्तों को छोड़ कर जाना पड़ेगा। दोस्तों और परिवार के समझाने के बाद भारी मन से मैंने नागपुर जाने की हामी भर दी। आखिर वो दिन आ गया जब मुझे जाना था। मेरे दोस्त और मेरा परिवार मुझे स्टेशन पर छोड़ने आया। माँ की आँखों में आँसू थे, पिता जी कुछ बोल नहीं रहे थे सिर्फ मुझे देख रहे थे जैसे की सोच रहे हो की मैं कितना बड़ा हो गया हूँ और मेरे दोस्त मेरा सामान उठा कर ट्रेन में रख रहे थे। जैसे ही ट्रेन ने स्टेशन छोड़ा मुझे लगा की मेरा एक हिस्सा लखनऊ में ही रह गया है।

नागपुर पहुँचते ही मुझे सब कुछ अलग लगा। जहाँ लखनऊ मैं कंपकपाने वाली सर्दी थी वहीं नागपुर का मौसम गर्म था। भाषा थोड़ी सी अलग थी और लोग भी अनजान थे। शुरू के कुछ दिनों तक मैं दफ्तर और किराये के घर तक ही सीमित रहा। शाम के खाली वक्त में सिर्फ परिवार और दोस्तों की याद आती।

नागपुर का खाना भी मुझे एकदम अलग लगा। तरी-पोहा, सावजी की तीखी सब्जी। खाते वक्त मैं सोचने लगता था काश! यहाँ भी लखनऊ का स्वाद मिल जाता। मुझे लगने लगा कि मैं ज्यादा दिन यहाँ रह नहीं सकता।

लेकिन समय के साथ चीजे बदलने लगी। दफ्तर के सहकर्मी मेरे दोस्त बन गये और फिर उन्होंने मुझे नागपुर घुमाना शुरू किया। अंबाझरी झील की शाम की शांति, फुटाला झील के पास का फास्ट फूड, दीक्षा भूमि की गंभीरता अब सब मुझे अच्छा लगने लगा। धीरे-धीरे नागपुर शहर भी मुझे अपना लगने लगा।

एक रविवार मैंने अपने दोस्तों के साथ मकरधोकड़ा डैम जाने का निश्चय किया। हम

सब दोस्त अपनी बाईक लेकर शहर के शोर से दूर जा रहे थे। जैसे-जैसे डैम पास आ रहा था हरियाली बढ़ती जा रही थी। पक्षियों की चहचहाहट, पेड़ों की सरसराहट और दूर से बहते पानी की हल्की ध्वनी साफ सुनाई दे रही थी।

जब हम डैम पहुँचे तो सामने का दृश्य मन खुश कर देने वाला था। शांत नीला पानी मन को बेहद सुकून दे रहा था। पानी पर पड़ती सूरज की किरणें चमक रही थी। इतना सुन्दर दृश्य देख कर मन प्रसन्न हो गया। फिर मैं अपने दोस्तों के साथ पानी में गया और फिर समय हँसते, खेलते कैसे कट गया पता ही नहीं चला और शाम हो गयी। शाम का दृश्य तो और भी ज्यादा अच्छा था। जैसे लग रहा था कि सूरज का नारंगी रंग पानी में उतर आया हो। हम सब दोस्त किनारे बैठ कर उस दृश्य का आनंद लेने लगे। मकरधोकड़ा डैम ने सिर्फ एक पिकनिक का अनुभव नहीं दिया बल्कि मन की शांति का भी अनुभव दिया।

नागपुर में रहते हुए अक्सर सुना था कि शहर से कुछ ही दूरी पर पेंच नेशनल पार्क है जहाँ हम जंगल की दुनियाँ देख सकते हैं। मेरे दोस्तों ने फिर वहाँ जाने का भी निश्चय किया। हम सभी सुबह-सुबह वहाँ के लिए निकल गये। पेंच नेशनल पार्क पहुँचने के बाद हमारी सफारी खुली जीप में गाइड के साथ शुरू हुई। घना जंगल और बड़े-बड़े पेड़ों के बीच चलने में आनंद और भय दोनों का अनुभव हो रहा था।

हमें निकले कुछ ही देर हुई थी कि हमें हिरणों का एक झुंड दिखाई दिया। हम सब ने उन की फोटो खींची, फिर हम आगे बढ़ गये। थोड़ा और आगे बढ़ने के बाद हमें बंदरों की आवाज सुनाई दी। हमारे गाइड ने गाड़ी रोक दी और हमें शांत रहने को कहने लगा। उसने हमें बताया की बंदरों की इस आवाज को अलर्ट कॉल कहते हैं। यह आवाज बंदर तब निकालता है जब आस-पास कोई शिकारी होता है। उसने अपनी बात खत्म ही की थी कि तभी हमें एक बाघ दिखाई दिया जो सच में राजा के तरह चलता चला जा रहा था। हमने उसकी भी फोटो खीची और फिर हम आगे निकल गये। देखते ही देखते शाम हो गयी और हमारी सफारी भी समाप्त हो गयी।

पेंच नेशनल पार्क की यह यात्रा सिर्फ एक घूमने का अनुभव नहीं था, बल्कि प्रकृति के करीब आने का मौका था। वहाँ जा कर समझ आया कि जंगल की अपनी एक दुनिया है जहाँ हर आवाज, हर हरकत का मतलब होता है।

इतनी जगह घूमते-घूमते मुझे नागपुर में रहते हुए 2 साल हो चुके हैं। नागपुर अब सिर्फ मेरा कार्यस्थल नहीं बल्कि मेरा घर बन चुका है। नागपुर की धूप, वहाँ की शामें और लोगों के प्यार ने मिलकर मेरे दिल में नागपुर की एक नई पहचान बना दी है। जो शहर मुझे कभी अजनबी लगता था वह अब मेरी जिन्दगी का हिस्सा बन गया है। कभी-कभी सफर हमें वहाँ ले जाता है जहाँ हम जाना नहीं चाहते, लेकिन वहीं हमें वह मिल जाता है जिसकी हमें जरूरत होती है- अपनापन।

❑ ❑ ❑

बालाजी श्री कार्तिकय मंदिर

श्री अभिलेख कुमार निराला
लिपिक

नागपुर का प्रमुख पर्यटन स्थल जिनमें प्रमुख मंदिर, वन्यजीव स्थल और ऐतिहासिक धरोहर जिनका मैंने नागपुर, कार्यालय प्रधान महालेखाकार लेखापरीक्षा, द्वितीय महाराष्ट्र नागपुर में एमटीएस पद पर कार्यभार ग्रहण करने के बाद, जिज्ञासा कहें या फिर मस्ती या घूमने फिरने की लालसा ही मुझे इन स्थलों पर ले गईं। जिनका मैं बारी-बारी से अपने समझ और ज्ञान के आधार पर इन्हें विस्तार से बताऊँगा कि कैसे इन खूबसूरत और मनमोहक स्थल, मन को ठंडक प्रदान करते हैं। कभी-कभी तो मैं इन स्थलों पर बार-बार गया हूँ जहाँ जाकर मैं और आप भी आत्मीय ऊर्जा के प्रवाह को अपने भीतर प्रवाहित होते हुए सहज ही महसूस कर सकते हैं जिससे जीवन में सात्विक ऊर्जा, सत्य और अपने भीतर सकारात्मक सोच ऊर्जा, आत्मीय भाव विभोर कर देने वाले अहसास प्राप्त होते हैं।

आप भी इन स्थलों पर स्वयं या परिवार सहित विचरण कर अपने कार्यभार के तनाव से मुक्त हो सकते हैं :-

बालाजी श्री कार्तिकेय मंदिर, सेमीनेरी हिल्स नागपुर -

नागपुर शहर का एक प्रमुख धार्मिक पर्यटन स्थल है बालाजी मंदिर जो सुंदर सेमिनरी हिल्स की चोटी पर अवस्थित है। जो मूल रूप से बालाजी यानि भगवान विष्णु एवं महागौरी शंकर पुत्र श्री कार्तिकेय को समर्पित मंदिर है। यह मंदिर अपने कार्यालय से 2-3 किलोमीटर की दूरी पर ही स्थित है। बालाजी मंदिर स्थापत्य कला का एक अद्भुत नमूना है जो प्रमुख रूप से दक्षिण और उत्तर भारत का मिश्रण लगता है। इनका प्रवेश द्वार राजगोपुरम प्रवेश द्वार है जो आमतौर पर एवं सहजता से प्रत्येक दक्षिण भारत के मंदिरों में आपको देखने को मिलता है और इसके हवादार गलियारे ऊपर इमारत की मंदिरों से मेल खाता है।

गोपुरम : दक्षिण भारतीय मंदिर वास्तुकला की एक प्रमुख विशेषता होती है। जो जटिल नक्काशी और मूर्तियों के साथ अपने विशाल प्रवेश द्वारों के लिए जाना जाता है। इन्हें मंदिर की भव्यता और आध्यात्मिक महत्व का प्रतीक माना जाता है।

आप जैसे ही लोहे की गेट से प्रवेश लेते हो कुछ पग चलने के उपरांत ही आपको दाये हाथ पर गोपुरम द्वार मिलता है। इनके सीढ़ियों पर पैर रखने के पहले ही आपको दो हाथियों की प्रतीमा स्वागत मुद्रा में दिखती हैं। इन्हें देखकर ऐसा लगता है कि जैसे यह आपके प्रवेश हेतु अत्यंत ही आतुर हैं। ये खासकर कम उम्र के बालक एवं बालिकाओं के लिए बहुत ही आकर्षण का केन्द्र है। कुछ ही सीढ़ियों के ऊपर चढ़ते ही आपको विशाल लकड़ी से बना प्रवेश द्वार दिखेगा। जिनके दरवाजे आपके दोनों हाथों की ओर खुलते है जिन पर सुंदर-सुंदर नक्काशी की हुई है जिन्हें देखकर आपका मन अत्यंत प्रसन्नता एवं उल्लास से भर जाता है। आपको दरवाजे को पूरा देखने के लिए अपने आँखों को आकाश की ओर करना पड़ेगा। इसके बाद ज्यों ही आप दरवाजे की चौखट को पार करते है आपको दोनों हाथों पर थोड़ी देर या क्षणिक विश्राम के लिए चबुतरें जैसे आकृति बनी है जिनकी ऊँचाई सामान्यतया आपके कमर के ऊपर ही होगा।

अब आप थोड़ा आगे चलेंगे तो आपको

छोटे-छोटे स्टेप की दस से बारह सीढ़ियाँ मिलेगी जिनके दोनों किनारों पर स्टील की पाटियाँ मिल जाएगी जो आपको थोड़ा ऊँचाई से गहराई या नीचे की ओर ले जाती है। जैसे ही आप नीचे पहुँचेंगे आप देखेंगे आपको एक अजीब सी शांति महसूस होगी जो शोर गुल आप अभी थोड़ी देर पहले मंदिर के प्रवेश के पूर्व सड़कों पर सुन रहे थे आपको अचानक ही लगेगा कि मैं कब दूर आ गया उन शोर शराबों से और आपको आनंद की अनुभूति होगी।

अब आप नीचे सीढ़ियों से आ गए हैं, अब आपके दायें हाथ पर माता लक्ष्मी जी का एक छोटा मंदिर दिखेगा। और बाये हाथ पर आगे बढ़ते हैं, कुछ कदम आगे बढ़ते ही आप को फिर से बायें हाथ पर ही तुलसी और फूल के पौधों का सुंदर क्यारियाँ मिल जाती हैं जिसकी खुशबू आपको और भी प्रसन्नचित करेंगी। इन क्यारियों की बनावट थोड़ी ऊँचाई पर है। इसके पीछे ही आप देख सकते है कि पीने के लिए पानी फिल्टर वाली मशीन और पाँच-छः नल भी लगे है जिसे आप हाथ धोने एवं पीने के लिए उपयोग में ला सकते है। इसके साथ ही हम आगे बढ़ते है आपको अय्यापा भगवान की प्रतिमा देखने को मिलेगी। मंदिर में, इसके बाद आगे बढ़ने पर आपको अंजनी पुत्र केसरी नंदन भगवान हनुमान जी की मुर्ति मंदिर में विराजमान मिलेगी और आगे बढ़ने पर आपको सर्प देवता मिलेंगे और आगे बढ़ने पर आपको नव ग्रहों के दर्शन एक साथ करने को मिल जायेगा। अब थोड़ा दायें हाथ मुड़ने पर सबसे पहले आपको आदिशक्ति माँ दुर्गा की प्रतिमा देखने को मिलती है। जो अपने वाहन सिंह के साथ विजराजमान है। आगे चलते रहने पर अब आपको शितला माता की प्रतिमा के दर्शन का लाभ मिलेगा।

थोड़ा आगे कदम बढ़ने पर अब आपको पार्वती पति, गौर पति आनादि अनंत, निराकार ऊँकार भगवान भोले नाथ के दर्शन होंगे जिनके द्वार पर स्वयं बुद्धि के दाता, रिद्धि सिद्धि के पति, गजानन, गौरी नंदन लंबोदर, भगवान गणेश विराजमान मिल जायेंगे। उनसे आशीर्वाद प्राप्त कर हम अब हम ऐश्वर्य के स्वामीनी भगवान विष्णु की अर्धांगिनी माता लक्ष्मी का दर्शन करते हैं। यहाँ उनकी मंदिरों के ऊपर अलग-अलग कलाकृति बनी हुई है जो उनकी सुंदरता को और भी सुंदर बनाता है। द्वार के आगे किनारे पर जो खम्भे लगे हुए हैं वहाँ प्रत्येक खम्बें के आधार पर सिंह की प्रतिमा बनी हुई है जैसे प्रत्येक स्तंभ/खम्भे को स्वयं सिंह पर ही स्थापित किया हुआ है। अब हम वापस वहाँ पर आते है जहाँ पर माता लक्ष्मी का मंदिर है, उसके किनारे से आगे बढ़ने पर आपको एक कमरा दिखेगा जहाँ से आप पूजा-अर्चना के लिए पर्ची ले सकते हैं एवं आप अपने हिसाब से जैसी पूजा-अर्चना, अभिषेक या प्रसाद चढ़ाना एवं उनका वितरण करवाना चाहते है कर सकते हैं।

आप चाहे तो पूजा अर्चना के लिए पर्ची ले सकते है या फिर ऐसे ही अपने पीछे मुड़कर गर्भगृह में प्रवेश कर भगवान बालाजी अर्थात जगत के पालनहार, जगत के स्वामी लक्ष्मी के पति भगवान विष्णु के दर्शन कर सकते है एवं आशीर्वाद प्राप्त कर उनके चारों ओर परिक्रमा करते हुए आगे बढ़ेंगे तो देखेंगे कि पीछे एक लिफ्ट लगी है, जिसके सहारे दिव्यांग जन एवं बुर्जुग जो सीढ़ियाँ चढ़ने में असमर्थ हैं वे सीधे लिफ्ट से ऊपर जाकर, गौरी पुत्र कार्तिकेय के दर्शन कर सकते हैं।

भगवान कार्तिकेय को दक्षिण भारत में रक्षक देवता के नाम से भी पूजा जाता है। इन्हें स्कन्द एवं मुरुगन नाम से भी प्रमुखतः संबोधित करते हैं। इसके दोनों हाथों में प्रवेश द्वार पर चांदी से बने हुए इन देवी-देवताओं के वाहन आपको देखने को मिल जाएंगे जिनमें गरुड़ वाहन, वृषभ वाहन, मयूर वाहन और गर्वग्रह के चारों ओर दीवारों पर प्रमुख देवी- देवताओं की कलाकृतियों का आनंद भी ले सकते हैं।

❑❑❑

नागपुर शहर

सुश्री यशी श्रीवास्तव
कनिष्ठ अनुवादक

भारतवर्ष की विशाल भू-धरा पर कुछ नगर ऐसे होते हैं जिनमें इतिहास की स्मृतियाँ, संस्कृति की गहराई, प्रकृति की सुंदरता और आधुनिकता की ऊर्जा एक साथ धड़कती प्रतीत होती है। महाराष्ट्र राज्य का प्रसिद्ध नगर नागपुर ऐसा ही एक नगर है। ''ऑरेंज सिटी'' के नाम से प्रसिद्ध यह शहर अपने स्वादिष्ट संतरे, ऐतिहासिक महत्व, धार्मिक स्थलों, जीवंत संस्कृति और प्राकृतिक सौंदर्य के कारण पूरे देश में विशिष्ट स्थान रखता है। यहाँ की भूमि इतिहास की स्मृतियों से समृद्ध है और यहा का जीवन आधुनिक प्रगति की ओर निरंतर अग्रसर दिखाई देता है।

नागपुर का इतिहास गौरव और वैभव से परिपूर्ण रहा है। प्राचीन काल से ही यह क्षेत्र विभिन्न शासकों के अधीन रहा, परंतु मराठा सम्राज्य के भोंसले वंश के शासन ने इसे अपने शासन का महत्वपूर्ण केंद्र बनाया और यहाँ अनेक स्थापत्य तथा सांस्कृतिक परंपराओं को विकसित किया। ब्रिटिश शासनकाल में नागपुर का महत्व और भी बढ़ गया। इसी समय यहाँ स्थापित ज़ीरो माइल स्टोन भारत के भौगोलिक केंद्र का प्रतीक बन गया। यह पत्थर उस स्थान को दर्शाता है जहां से पूरे भारत की दूरियाँ मापी जाती थीं। आज भी यह स्मारक नागपुर की एतिहासिक पहचान का एक महत्वपूर्ण चिह्न है। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात नागपुर राज्य का एक प्रमुख प्रशासनिक केंद्र बन गया। यह राज्य की शीतकालीन राजधानी के रूप में भी प्रसिद्ध है, जहाँ महाराष्ट्र विधानसभा का शीतकालीन अधिवेशन आयोजित किया जाता है।

भौगोलिक दृष्टि से नागपुर दक्कन के पठार पर स्थित है और चारों ओर से हरित वनों तथा पहाड़ियों से घिरा हुआ है। इसकी केंद्रीय स्थिति के कारण यह शहर देश के विभिन्न भागों से रेल, सड़क और हवाई मार्ग द्वारा सुगमता से जुड़ा हुआ है। यही कारण है कि नागपुर मध्य भारत का एक प्रमुख व्यापारिक और औद्योगिक केंद्र भी बन चुका है।

नागपुर की संस्कृति बहुरंगी और समन्वयपूर्ण है। यहाँ विभिन्न भाषाओं, धर्मों और परंपराओं के लोग एक साथ रहते है और एक समृद्ध सांस्कृतिक वातावरण का निर्माण करते है। मराठी यहाँ की प्रमुख भाषा है, किंतु हिंदी और अँग्रेजी भी व्यापक रूप से बोली और समझी जाती है। यह शहर पारंपरिक महाराष्ट्रीयन संस्कृति और आधुनिक जीवन शैली का सुंदर समन्वय प्रस्तुत करता है।

नागपुर में संगीत, नृत्य, नाटक और साहित्यिक गतिविधियों का विशेष महत्व हैं। समय-समय पर यहाँ अनेक सांस्कृतिक समारोह, नाट्य प्रस्तुतियाँ और साहित्यिक

गोष्ठियाँ आयोजित होती रहती है जो इस नगर की कलात्मक चेतना को अभिव्यक्त करती हैं। नागपुर का भोजन भी इसकी सांस्कृतिक विविधता का परिचायक है। यहाँ का प्रसिद्ध सावजी व्यंजन अपने तीखे, मसालेदार और विशिष्ट स्वाद के कारण दूर-दूर तक प्रसिद्ध है। प्रातः कालीन नाश्ते में मिलने वाला तरी पोहा नागपुर की एक अनोखी पहचान है। हल्के और स्वादिष्ट पोहे के ऊपर मसालेदार तरी डालकर परोसा जाने वाला यह व्यंजन यहाँ के लोगों के दैनिक जीवन का हिस्सा बन चुका है। इसके अलावा संतरे से बनने वाली 'संतरा बर्फी' यहाँ की प्रसिद्ध मिठाई है, जो स्वाद और सुगंध का अद्भुत संगम प्रस्तुत करती है।

यह शहर प्राकृतिक सौंदर्य, ऐतिहासिक स्मारकों और आध्यात्मिक स्थानों से परिपूर्ण है। दीक्षाभूमि इस शहर का सबसे महत्वपूर्ण और पवित्र स्थल है। यहाँ 1956 में डॉ. भीमराव अंबेडकर ने अपने अनुनाइयों के साथ बौद्ध धर्म ग्रहण किया था। अंबाझरी झील नागपुर की प्राकृतिक सुंदरता का अद्भुत उदाहरण है। इसी प्रकार फुटाला झील अपने आकर्षक रोशनी और मोहक सूर्यास्त के लिए प्रसिद्ध है। नागपुर के आसपास स्थित पेंच राष्ट्रीय उद्यान और ताडोबा-अंधारी टाइगर रिज़र्व वन्य जीव प्रेमियों के लिए स्वर्ण समान है, जहाँ प्रकृति की विविधता और वन्य जीवन की अद्भुत झलक देखने को मिलती है।

नागपुर धार्मिक आस्था का भी एक महत्वपूर्ण केंद्र है। यहाँ अनेक प्राचीन और प्रसिद्ध मंदिर स्थित है। टेकड़ी गणेश मंदिर नागपुर का बहुत प्राचीन और लोकप्रिय मंदिरों में से एक है। रेलवे स्टेशन के निकट स्थित यह मंदिर भक्तों की आस्था का प्रमुख केंद्र है। नागपुर के समीप स्थित रामटेक का श्रीराम मंदिर अत्यंत पवित्र स्थल माना जाता है। लोककथाओं के अनुसार भगवान राम ने अपने वनवास के दौरान यहाँ कुछ समय व्यतीत किया था। इसके अतिरिक्त सेमीनरी हिल्स का बालाजी मंदिर भी एक प्रसिद्ध धार्मिक स्थल है।

नागपुर केवल एक शहर ही नहीं, बल्कि संस्कृति, इतिहास, प्रकृति और आध्यात्मिकता का जीवंत संगम है। यहाँ की झीलों की शांति, मंदिरों की पवित्रता, भोजन की स्वादिष्टता और त्योहारों की रंगीनता इस नगर को अद्वितीय बनाती है। भारत के हृदय में स्थित यह नगर अपनी परंपराओं की जड़ों को संजोए हुए आधुनिक विकास की दिशा में निरंतर अग्रसर है। इस प्रकार नागपुर न केवल महाराष्ट्र का गौरव है, बल्कि पूरे भारत की सांस्कृतिक और भौगोलिक पहचान का एक उज्ज्वल प्रतीक भी है।

❑❑❑

खेल भावना, प्रतिस्पर्धा और उत्साह का अद्भुत संगम

श्री रसिक सूर्यवंशी
स.ले.प.अ.

यद्यपि पश्चिम क्षेत्र आईएएंडएडी फुटबॉल टूर्नामेंट 2026 का औपचारिक आरंभ 09 फरवरी 2026 से निर्धारित था, परंतु इस भव्य आयोजन की तैयारियाँ कार्यालय स्तर पर कई दिनों पहले ही प्रारंभ हो चुकी थीं। इस महत्वपूर्ण खेल आयोजन को सफल बनाने के लिए विभिन्न समितियों का गठन किया गया था। इनमें ग्राउंड समिति, भोजन समिति, स्वागत समिति तथा परिवहन समिति जैसी समितियाँ शामिल थीं, जिनका उद्देश्य आयोजन के अलग-अलग कार्यों का सुचारु संचालन सुनिश्चित करना था। इन सभी समितियों के समन्वय और प्रभावी संचालन के लिए एक मुख्य समिति भी गठित की गई थी।

इन सभी व्यवस्थाओं के केंद्र में कार्यालय के महालेखाकार, श्री दत्तप्रसाद शिरसाट का मार्गदर्शन और संरक्षण रहा। उनके कुशल नेतृत्व तथा समय-समय पर दिए गए मार्गदर्शन ने सभी समितियों को अपने दायित्वों का प्रभावी ढंग से निर्वहन करने के लिए प्रेरित किया। आयोजन से जुड़े सभी सदस्यों के अथक प्रयासों का ही परिणाम था कि यह टूर्नामेंट अत्यंत सुव्यवस्थित, सफल और यादगार बन सका।

टूर्नामेंट के प्रथम दिन, अर्थात 09 फरवरी 2026 को, खिलाड़ियों तथा आयोजन समिति के सदस्यों के लिए होटल तुली इंटरनेशनल, नागपुर में एक भव्य गाला डिनर का आयोजन किया गया। यह आयोजन वस्तुतः पूरे टूर्नामेंट की उत्साहपूर्ण शुरुआत का प्रतीक था। इस अवसर पर खिलाड़ियों और अधिकारियों के बीच आपसी परिचय और सौहार्द्र का वातावरण बना, जिसने आगामी मैचों के लिए सभी में नई ऊर्जा और उत्साह भर दिया।

गाला डिनर की सबसे आकर्षक प्रस्तुति रही सुश्री भाविका जोशी लाठे, वरिष्ठ उप महालेखाकार तथा श्री विलास पाटिल, उप महालेखाकार द्वारा प्रस्तुत किए गए मधुर गीत, जिन्होंने उपस्थित सभी लोगों का मन मोह लिया। उनके सुरों ने उस शाम को और भी यादगार बना दिया तथा पूरे वातावरण में उत्साह और उल्लास की एक विशेष छटा बिखेर दी।

खेल केवल प्रतिस्पर्धा का माध्यम नहीं होता, बल्कि यह टीम भावना, अनुशासन, नेतृत्व और समर्पण का सशक्त प्रतीक भी है। जब मैदान में खिलाड़ी अपने पूरे जोश और ऊर्जा के साथ उतरते हैं, तो खेल केवल खेल नहीं रहता वह एक उत्सव बन जाता है। इस प्रतिष्ठित टूर्नामेंट में पाँच टीमों महालेखाकार महाराष्ट्र (मेज़बान), महालेखाकार राजस्थान, महालेखाकार गुजरात, महालेखाकार मध्य प्रदेश तथा महालेखाकार

छत्तीसगढ़ ने भाग लिया। प्रतियोगिता का आयोजन 9 फरवरी से 13 फरवरी 2026 तक राउंड-रॉबिन प्रारूप में किया गया, जिसमें कुल 10 रोमांचक मुकाबले खेले गए। इन पाँच दिनों में मैदान पर खिलाड़ियों की ऊर्जा, कौशल और खेल भावना ने सभी दर्शकों को रोमांचित कर दिया।

रोमांच से भरे मुकाबले

टूर्नामेंट के पहले दिन ही दर्शकों को रोमांचक मुकाबलों का आनंद मिला। पहले मैच में मेज़बान टीम महालेखाकार महाराष्ट्र ने महालेखाकार राजस्थान के विरुद्ध शानदार प्रदर्शन करते हुए 6-0 की प्रभावशाली जीत दर्ज की। इस मैच में आक्रामक खेल और बेहतरीन समन्वय देखने को मिला। इस मुकाबले के मैन ऑफ द मैच श्री अकबर सिद्दीकी रहे जिन्होंने शानदार प्रदर्शन किया।

उसी दिन खेले गए दूसरे मुकाबले में महालेखाकार गुजरात और महालेखाकार मध्य प्रदेश के बीच जोरदार प्रतिस्पर्धा देखने को मिली। दोनों टीमों ने शानदार आक्रमण करते हुए मैच को 3-3 की बराबरी पर समाप्त किया। यह मैच दर्शकों के लिए अत्यंत रोमांचक रहा और इसमें अभिषेक रट्टू को मैन ऑफ द मैच चुना गया।

दूसरे दिन महालेखाकार गुजरात ने महालेखाकार छत्तीसगढ़ को 3-0 से पराजित करते हुए शानदार जीत दर्ज की। वहीं महालेखाकार राजस्थान ने महालेखाकार मध्य प्रदेश के विरुद्ध 2-0 से जीत हासिल कर टूर्नामेंट में अपनी स्थिति मजबूत की। दोनों मैचों में खिलाड़ियों का उत्साह और कौशल देखने लायक था।

तीसरे दिन का मुकाबला महालेखाकार राजस्थान और महालेखाकार गुजरात के बीच खेला गया, जो 2-2 की बराबरी पर समाप्त हुआ। यह मैच अपने रोमांच के साथ-साथ कुछ खिलाड़ियों की चोटों के कारण भी चर्चा में रहा। उसी दिन महालेखाकार महाराष्ट्र ने महालेखाकार छत्तीसगढ़ के विरुद्ध लगभग 80 प्रतिशत मैदान पर नियंत्रण रखते हुए 3-0 की शानदार जीत दर्ज की।

महाराष्ट्र का शानदार प्रदर्शन

चौथे दिन महालेखाकार महाराष्ट्र और महालेखाकार मध्य प्रदेश के बीच मुकाबला खेला गया जिसमें महाराष्ट्र ने 2-0 से जीत हासिल कर टूर्नामेंट में शीर्ष स्थान सुनिश्चित किया। टीम के कप्तान सुमित पुंडीर और गोलकीपर अलीम शेख के शानदार रक्षात्मक प्रदर्शन के कारण टीम ने लगातार क्लीन शीट बनाए रखीं। इस मैच में नचिकेत पल्लव द्वारा किया गया शानदार फ्री-किक गोल दर्शकों के लिए विशेष आकर्षण का केंद्र रहा।

उसी दिन महालेखाकार राजस्थान ने महालेखाकार छत्तीसगढ़ को 3-0 से पराजित कर अपनी मजबूत दावेदारी पेश की।

अंतिम दिन का रोमांच

टूर्नामेंट के अंतिम दिन महालेखाकार मध्य प्रदेश ने महालेखाकार छत्तीसगढ़ को 3-0 से हराकर शानदार जीत दर्ज की। इसके बाद पूरे टूर्नामेंट का सबसे बहुप्रतीक्षित मुकाबला

महालेखाकार महाराष्ट्र और महालेखाकार गुजरात के बीच खेला गया। इस मैच में महालेखाकार गुजरात के लिए जीत आवश्यक थी, परंतु मेज़बान टीम महालेखाकार महाराष्ट्र ने अपना शानदार प्रदर्शन जारी रखते हुए 4-0 से निर्णायक जीत दर्ज की और पूरे टूर्नामेंट में अपना दबदबा कायम रखा।

अंतिम परिणाम

टूर्नामेंट के अंत में टीमों की स्थिति इस प्रकार रही

* विजेता महालेखाकार महाराष्ट्र
* उपविजेता महालेखाकार गुजरात
* तीसरा स्थान महालेखाकार राजस्थान
* 4 मध्य प्रदेश
* 5 छत्तीसगढ़

भव्य समापन समारोह

13 फरवरी 2026 को इस टूर्नामेंट का भव्य समापन समारोह आयोजित किया गया। इस अवसर पर अनेक गणमान्य अतिथियों की गरिमामयी उपस्थिति रही। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डॉ. सिबिचेन के. मैथ्यू, महानिदेशक, नेशनल अकादमी ऑफ डायरेक्ट टैक्सेस थे, जबकि विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री अब्दुल खालिक, पूर्व अंतरराष्ट्रीय फुटबॉल खिलाड़ी उपस्थित रहे।

समारोह के दौरान खिलाड़ियों के उत्कृष्ट प्रदर्शन को सम्मानित किया गया। विभिन्न श्रेणियों में सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ियों को पुरस्कार प्रदान किए गए। इसके अतिरिक्त टूर्नामेंट के सफल आयोजन में योगदान देने वाले चयनकर्ताओं, रेफरी, कमेंटेटरों तथा चिकित्सा दल को भी सम्मानित किया गया।

एक यादगार आयोजन

पाँच दिनों तक चले इस फुटबॉल महोत्सव ने यह सिद्ध कर दिया कि खेल केवल प्रतिस्पर्धा का माध्यम नहीं है, बल्कि यह टीम भावना, सौहार्द और सहयोग का भी प्रतीक है। मैदान पर खिलाड़ियों की मेहनत, दर्शकों का उत्साह तथा आयोजकों की उत्कृष्ट व्यवस्था ने इस टूर्नामेंट को एक यादगार अनुभव बना दिया।

इस सफल आयोजन के लिए कार्यालय महालेखाकार (लेखा परीक्षा), महाराष्ट्र, नागपुर के सभी अधिकारियों, कर्मचारियों तथा आयोजन समिति के सदस्यों का योगदान अत्यंत सराहनीय रहा। उनके समर्पण और सामूहिक प्रयासों ने इस आयोजन को एक आदर्श खेल आयोजन का स्वरूप प्रदान किया।

❑ ❑ ❑

प्रशासनिक शब्दावली

Accountability	जवाब देही
Ad hoc	तदर्थ
Appendix	परिशिष्ट
Attestation	साक्ष्यांकन
Bonafide	वास्तविक
Charge	प्रभार
Compensation	क्षतिपूर्ति
Confirmation	पुष्टि
Ex-officio	पदेन
Honararium	मानदेय
Initials	आद्यक्षर
Joining Report	कार्यग्रहण रिपोर्ट
Modus Operandi	कार्य प्रणाली
Officiating	स्थानापन्न
Proceedings	कार्यवाही
Returning Officer	निर्वाचन अधिकारी
Stagnation	गतिरोध
Verification	सत्यापन
Adjustment	समायोजन
Automatic	स्वचालित
Exchange	विनिमय
Guarantee	प्रत्याभूति
Insolvency	दिवाला/ दिवालियापन
Investment	निवेश
Invoice	बीजक
Lease	पट्टा
Lumpsum	एकमुश्त
Manuscript	पांडुलिपि
Morgage	गिरवी/बंधक
Ownership	स्वामित्व
Partnership	साझा/साझेदारी
Rectification	परिशोधन

Recurring	आवर्ती
Depositor	जमाकर्ता
Dividend	लाभांश
Drawee	अदाकर्ता
Exchange	विनिमय
Account Circle	लेखा-परिमंडल
Account Code	लेखा संहिता
Account Procedure	लेखा प्रक्रिया
Acquittance roll	वेतन चिट्ठी, निस्तारण पत्र
Amenities	सुविधाएँ
Audit Instruction	लेखा परीक्षा अनुदेश, संपरीक्षा अनुदेश
Balance Closing	अंत शेष, इति शेष
Balance Opening	आदि शेष, आरंभिक शेष
Contributory Provident Fund	अंशदायी भविष्य निधि
Disbursement	संवितरण
Emoluments	परिलब्धियाँ
Impreset	अग्रदाय
Indent	मांग-पत्र
Major Head	मुख्य शीर्ष
Minor Head	लघु शीर्ष
Utilization Certificate	उपयोग प्रमाण पत्र
Comptroller and Auditor	भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक
General of India	
Accountant General	महालेखाकार
Additional Accountant General	अपर महालेखाकार
Accounts Officer	लेखा अधिकारी
Auditor	लेखा परीक्षक

❑❑❑

कार्यालयीन हिंदी के वाक्य साँचे

- This performance Audit was conducted to assess the implementation of the scheme.

  यह निष्पादन लेखापरीक्षा योजना के क्रियान्वयन का आंकलन करने के लिए की गई।

- This Report has been prepared for submission to the President of India.

  यह प्रतिवेदन भारत के राष्ट्रपति को प्रस्तुत करने के लिए तैयार किया गया है।

- The Report contains significant result of the Compliance audit of the Ministry.

  इस प्रतिवेदन में मंत्रालय की अनुपालन लेखापरीक्षा के महत्वपूर्ण परिणाम निहित है।

- The Comptroller and Auditor General of India conducts the audit of receipts of the Union Govvernment.

  भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक संघ सरकार की प्राप्तियों की लेखापरीक्षा करते है।

- Ministry has initiated action in respect of cases pointed out by Audit.

- मंत्रालय ने लेखापरीक्षा द्वारा बताए गए मामलों के संबंध में कार्रवाई आरंभ की है।

- The accounts of Government Companies are audited by C&AG of India.

  सरकारी कम्पनियो के लेखाओं की लेखापरीक्षा भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक द्वारा की जाती है।

- Audit findings are discussed in the succeeding paragraphs.

  लेखापरीक्षा निष्कर्षो की चर्चा आगामी पैराग्राफों में की गई है।

- A performance Audit was undertaken to assess the efficiency of the Department.

  विभाग की दक्षता का निर्धारण करने के लिए निष्पादन लेखापरीक्षा की गई थी।

- The test check by the Author has been carried out to the required percentage.

  लेखापरीक्षक के द्वारा नमूना जाँच अपेक्षित प्रतिशत तक की गई है।

- Audit is done in accordance with the prescribed norms and adequate procedure.

  लेखापरीक्षा निर्धारित मानकों और पर्याप्त प्रक्रिया के अनुसार की गई है।

- The paragraphs included in this report relate to the Ministries/Departments of Government of India.

  इस प्रतिवेदन में सम्मिलित पैराग्राफ भारत सरकार के मंत्रालयों/विभागों से संबंधित है।

- The Ministry accepted audit observation and has initiated action in most cases.

  मंत्रालय ने लेखापरीक्षा आपत्ति स्वीकार कर ली और अधिकतर मामलों में कार्यवाही आरंभ की है।

- The department stated that the matter has been taken up with the higher authorities.

  विभाग ने कहा कि मामले को उच्च प्राधिकारियों के समक्ष लाया गया है।

- The matter was brought to the notice of the department

  मामलों को विभाग के संज्ञान में लाया गया था।

- Audit noticed deficiencies in internal control mechanism of revenue management.

  लेखापरीक्षा ने राजस्व प्रबंधन के आन्तरिक नियंत्रण तंत्र में कमियों को देखा।

- Department has submitted an action plan to the concerned ministry.

  विभाग ने संबंधित मंत्रालय को एक कार्ययोजना प्रस्तुत की।

- Data not made available by the State Government

  राज्य सरकार द्वारा उपलब्ध नहीं कराए गए आंकड़े।

- Please treat this strictly as confidential.

  कृपया इसे पूरी तरह गोपनीय समझा जाए।

- Draft reply on the lines suggested above may be put up

  उपयुक्त सुझावों के आधार पर उत्तर का मसौदा पेश करें।

❑❑❑

हिंदी के प्रयोग के लिए वर्ष 2026-27 का वार्षिक कार्यक्रम

क्र.सं.	कार्य विवरण	''क'' क्षेत्र		''ख'' क्षेत्र		''ग'' क्षेत्र	
1.	हिंदी में मूल पत्राचार (ई-मेल सहित)	1. क क्षेत्र से क क्षेत्र को	100%	1. ख क्षेत्र से क क्षेत्र को	90%	1. ग क्षेत्र से क क्षेत्र को	60%
		2. क क्षेत्र से ख क्षेत्र को	100%	2. ख क्षेत्र से ख क्षेत्र को	90%	2. ग क्षेत्र से ख क्षेत्र को	60%
		3. क क्षेत्र से ग क्षेत्र को	70%	3. ख क्षेत्र से ग क्षेत्र को	60%	3. ग क्षेत्र से ग क्षेत्र को	60%
		4. क क्षेत्र से क व ख क्षेत्र के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति	100%	4. ख क्षेत्र से क व ख क्षेत्र के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति	90%	4. ग क्षेत्र से क व ख क्षेत्र के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र कार्यालय/व्यक्ति	60%
2.	हिंदी में प्राप्त पत्रों का उत्तर हिंदी में दिया जाना	100%		100%		100%	
3.	हिंदी में टिप्पण	80%		55%		35%	
4.	हिंदी माध्यम से प्रशिक्षण कार्यक्रम	75%		65%		35%	
5.	हिंदी टंकण करने वाले कर्मचारी एवं आशुलिपिक की भर्ती	80%		70%		45%	
6.	हिंदी में डिक्टेशन/की बोर्ड पर सीधे टंकण (स्वयं तथा सहायक द्वारा)	70%		60%		35%	
7.	हिंदी प्रशिक्षण (भाषा, टंकण, आशुलिपि)	100%		100%		100%	
8.	द्विभाषी प्रशिक्षण सामग्री तैयार करना	100%		100%		100%	
9.	जर्नल और मानक संदर्भ पुस्तकों को छोड़कर पुस्तकालय के कुल अनुदान में से डिजिटल सामग्री अर्थात हिंदी ई-पुस्तक, समचार पत्र सीडी/डीवीडी, पैनड्राइव तथा अंग्रेजी और क्षेत्रीय भाषाओं से हिंदी में अनुवाद पर व्यय की गई राशि सहित हिंदी पुस्तकों की खरीद पर किया गया व्यय।	50%		50%		50%	
10.	हिंदी और अंग्रजी दोनों भाषाओं में काम करने की सुविधायुक्त इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों जिनमें कंप्यूटश्र भी शामिल है, की खरीद	100%		100%		100%	
11.	वेबसाईट द्विभाषी हो	100%		100%		100%	

12.	नागरिक चार्टर तथा जन सूचना बोर्डो आदि द्विभाषी रूप में प्रदर्शित किए जाएं।	100%	100%	100%
13.	(i) मंत्रालयो/विभागो और कार्यालयों के अधिकारियों (उ.स./निदे.सं.सं) तथा राजभाषा विभाग के अधिकारियों द्वारा अपने मुख्यालय से बाहर स्थित कार्यालयों का निरीक्षण (कार्यालयों का प्रतिशत)	30% (न्यूनतम)	30% (न्यूनतम)	30% (न्यूनतम)
	(ii) मुख्यालय में स्थित अनुभागों का निरीक्षण	30% (न्यूनतम)	30% (न्यूनतम)	30% (न्यूनतम)
	(iii) विदेश में स्थित केंद्र सरकार के स्वामित्व एवं नियंत्रण के अधीन कार्यालयों/उपक्रमों का संबंधित अधिकारियों तथा राजभाषा विभाग के अधिकारियों द्वारा संयुक्त निरीक्षण		वर्ष में कम से कम एक निरीक्षण	
14.	राजभाषा संबंधी बैठके (क) हिंदी सलाहकार समिति (ख) नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (ग) राजभाषा कार्यान्वयन समिति		वर्ष मे 2 बैठके वर्ष में 2 बैठके (प्रति छमाही एक बैठक) वर्ष में 4 बैठक (प्रति तिमाही एक बैठक)	
15.	कोड, मैनुअल, फॉर्म, प्रक्रिया और साहित्य का हिंदी अनुवाद	100%	100%	100%
16.	मंत्रालयो/विभागो/कार्यालयो/बैंको/उपक्रमो के ऐसे अनुभाग जहाँ संपूर्ण कार्य हिंदी में हो।	45%	35% (न्यूनतम अनुभाग)	25%

सार्वजनिक क्षेत्र के उन उपक्रमों/निगमों आदि, जहाँ अनुभाग जैसी कोई अवधारणा नहीं है, 'क' क्षेत्र में कुल कार्य का 45% 'ख' क्षेत्र में 30% और 'ग' क्षेत्र में 20% कार्य हिंदी में किया जाए।

◆ ◆ ◆

हिंदी कार्यशाला

राजभाषा विभाग के निदेशानुसार, कार्यालयीन कामकाज में राजभाषा कार्यान्वयन को सरल एवं सहज बनाने हेतु हिंदी अनुभाग द्वारा प्रत्येक तिमाही में हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया जाता है। इसमें अधिकारियों/कर्मचारियों को कार्यालयीन कामकाज हिंदी में करने का प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है। अक्टूबर-दिसंबर, 2025 की एक पूर्ण दिवसीय कार्यशाला दिनांक 30.12.2025 को तथा जनवरी-मार्च, 2026 की दो अर्धदिवसीय कार्यशालाएं दिनांक 10.03.2026 एवं 11.03.2026 को आयोजित की गई।

राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक

कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II), महाराष्ट्र, नागपुर में राजभाषा नीति का कार्यान्वयन सुचारू रूप से जारी है। राजभाषा विभाग के निदेशानुसार विगत तिमाहियों की प्रगति प्रतिवेदनों को ऑनलाइन प्रेषित किया गया। विभिन्न अनुभागों से प्राप्त प्रतिवेदनों की समीक्षा की गई तथा संबंधित अनुभागों को अपेक्षित सुधार करने हेतु कार्यालय आदेश जारी किए गए।

जुलाई-सितंबर, 2025 एवं अक्टूबर-दिसंबर, 2025 की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठकें महालेखाकार महोदय की अध्यक्षता में क्रमशः दिनांक 17.10.2025 एवं 20.01.2026 को आयोजित की गई। राजभाषा की प्रगति से संबंधित सभी पहलुओं पर विस्तार से चर्चा की गई तथा कार्यालय में राजभाषा का सुचारू कार्यान्वयन सुनिश्चित करने पर बल दिया गया।

जुलाई-सितंबर, 2025 तिमाही के दौरान सर्वाधिक हिंदी पत्राचार हेतु 'वित्त मुख्यालय-I & II अनुभाग' को एवं सर्वाधिक हिंदी टिप्पण हेतु 'रिपोर्ट-II अनुभाग' को महालेखाकार द्वारा चल शील्ड प्रदान किया गया। अक्टूबर-दिसंबर, 2025 तिमाही के दौरान सर्वाधिक हिंदी पत्राचार हेतु 'केंद्रीय लेखा परीक्षा/एफ.ए.डबल्यू.-II अनुभाग' अनुभाग को एवं सर्वाधिक हिंदी टिप्पण हेतु 'विधि एवं ए.पी.ए.आर. अनुभाग' को महालेखाकार द्वारा चल शील्ड प्रदान किया गया।

❑❑❑

हिंदी पखवाड़ा 2025 की झलकियाँ

हिंदी गृह पत्रिका 'रश्मि' के 'राजभाषा विशेषांक' 39 वें अंक का विमोचन

गणतंत्र दिवस के अवसर पर संबोधित करते हुए महालेखाकार महोदय

कार्यालय में हिंदी पखवाड़ा 2025 के अवसर पर आयोजित की गई हिंदी पुस्तक प्रदर्शनी की कुछ झलकियां।

आपके पत्र

पत्रिका में श्री मनोज बिनकर की कविता ''होरी खेलन श्याम'', सुश्री वंदना का लेख ''ब्रोकेन यट ब्यूटीफुल'' एवं ए. के. सिन्हा की कविता ''दोस्ती'' सहित सभी रचनाएँ सुंदर, मनमोहक एवं भावप्रद हैं एवं रचनाकारों के हिन्दी भाषा के प्रति निष्ठा एवं रुचि का प्रतीक हैं।

पत्रिका के प्रकाशन के लिए रचनाकारों का प्रयास एवं श्रम प्रशंसनीय है, पत्रिका के सभी आगामी अंकों की प्रगति एवं सफलता हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ।

कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हक) उत्तराखंड, ऑडिट भवन, कौलागढ़, देहरादून

✤ ✤ ✤

उपर्युक्त संदर्भित पत्र के साथ आपके कार्यालय द्वारा ''रश्मि'' के 39 वें अंक के ई-प्रति प्राप्त हुई, तदर्थ धन्यवाद । पत्रिका में सभी रचनाएँ प्रशंसनीय है विशेष तौर पर मन्नत की पहली बारिशः एक मासूम नजरिया, सद्गुरु कौन, आधुनिकता में प्राचीनता की ओर, सुखः यात्रा या मंजिल?, दोस्ती, आदि रचनाएँ सारगर्भित एवं सराहनीय हैं।

पत्रिका की साज-सज्जा उत्तम हैं। कार्यालयीन चित्रों ने पत्रिका की सुंदरता को और निखारा है। पत्रिका के कुशल तथा सफल संपादन हेतु संपादक मण्डल को हार्दिक बधाई। पत्रिका के निरंतर उज्ज्वल भविष्य हेतु शुभकामनाएँ।

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II) म.प्र.

✤ ✤ ✤

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित रश्मि के 39वें अंक के ई-पत्रिका की प्राप्ति हुई। पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं ज्ञानवर्धक एवं रोचक हैं। पत्रिका का आवरण पृष्ठ एवं पत्रिका में प्रकाशित छायाचित्र अत्यंत आकर्षक और मनमोहक है। साथ ही साथ पत्रिका का कलेवर भी अत्यंत आकर्षक है। कविताएं और लेख भी भावपूर्ण, सार्थक तथा मन को छू लेने वाली हैं। इनमें से जो रचनाएँ अति उत्तम लगी वो हैं- होरी खेलन श्याम, सद्गुरू कौन?, आम का पौधा, सुखः यात्रा या मंजिल?, जीवन की अनिश्चितता तथा ब्रोकेन, यट ब्यूटीफुल आदि।

आशा करता हूँ कि पत्रिका की गुणवत्ता एवं रचनात्मकता में उत्तरोत्तर प्रगति जारी रहेगी। पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य तथा आगामी अंकों के लिये बहुत-बहुत शुभकामनाएं।

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II) पश्चिम बंगाल

✤ ✤ ✤

आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका ''रश्मि'' के 39 वें अंक की सॉफ्ट कॉपी प्राप्त हुई। पत्रिका का मुख पृष्ठ बहुत आकर्षक है। ''रश्मि'' राजभाषा के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ भावाभिव्यक्ति की दृष्टि से भी अत्यंत प्रभावशाली है। इस अंक में निहित सभी रचनाएँ उच्चस्तरीय एवं रोचक हैं; विशेषकर, सद्गुरु कौन, आम का पौधा, ''ऐ जिंदगी'' एवं दोस्ती आदि।

पत्रिका ''राश्म'' के 39 वें अंक के सफल प्रकाशन के लिए संपादक मण्डली को बधाई। पत्रिका के अनवरत प्रगति एवं स्वर्णिम भविष्य के लिए शुभकमनाएं।

प्रधान महालेखाकार (ले.व ह.) का कार्यालय, बीरचंद पटेल पथ, पटना, बिहार

✤ ✤ ✤

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (का.1), नागपुर द्वारा वर्ष 2024-25 हेतु कार्यालय की हिंदी गृह पत्रिका 'रश्मि' के लिए पुरस्कार प्राप्त करते हुए उपमहालेखाकार (प्रशासन) एवं सहायक निदेशक (राजभाषा)।

राजभाषा अधिनियम, 1963 की धारा 3(3)

Section 3(3) of the Official Languages Act, 1963

इस धारा के अंतर्गत निम्नलिखित 14 प्रकार के दस्तावेजों के लिए हिंदी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं का प्रयोग किया जाना है।

1. संकल्प (Resolutions)
2. सामान्य आदेश (General Orders)
3. नियम (Rules)
4. अधिसूचनाएँ (Notifications)
5. प्रशासनिक तथा अन्य रिपोर्ट (Administrative & Other Reports)
6. प्रेस विज्ञप्तियाँ (Press Communiques)
7. संसद के सदनों के समक्ष राखी जाने वाली रिपोर्ट
   (Report to be laid before the houses of the Parliament)
8. सरकारी दस्तावेज (Government Papers)
9. संविदाएँ (Contracts)
10. करार (Agreements)
11. अनुज्ञप्तियाँ (Licences)
12. अनुज्ञा पत्र (Permits)
13. निविदा सूचना (Tender Notices)
14. निविदा-प्रपत्र (Tender Forms)

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest